bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org
संवत 2079 युगाब्द 5124 कुल पृष्ठ –32 दिसम्बर प्रथम अंक – 9

वर्तमान

कमल ज्योति

जनता जनार्दन प्रणाम!

A.K.TENT & CATERERS (9839016009)
A.K.TENT & CATERERS (9839016009)

TAYAL GANDHI TEN

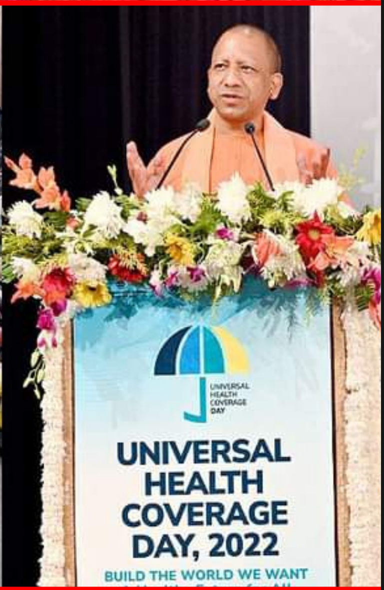
UNIVERSAL HEALTH COVERAGE DAY, 2022
BUILD THE WORLD WE WANT

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय
कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक
नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

भारतरत्न बाबासाहब जी को कोटिश: नमन्!

उ0प्र0 की उत्तम होती अर्थ व्यवस्था

डबल इंजन की मोदी जैसी आपदा से आर्थिक क्षेत्र में अपने रही है। जिसमें देश का को उत्तम व्यवस्थित विदेश के निवेशकों को आमन्त्रित कर रहा है। समिट के लिए विदेशों लाती नजर आ रही है। के समूह जहां जहां सकारात्मक परिणाम

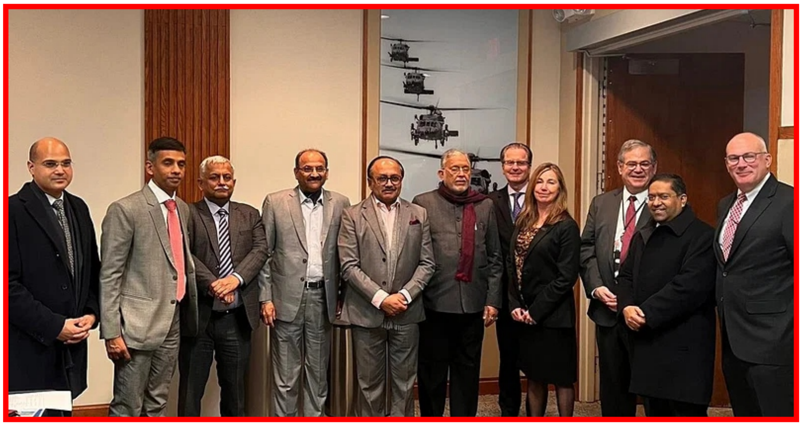

योगी सरकार करोना निपटने के बाद पैर मजबूत करती जा बड़ा प्रान्त उ0प्र0 अपने प्रदेश बनाते हुए। देश व्यापार के लिए यूपी ग्लोबल इन्वेस्टर्स से निवेश की मुहिम रंग मंत्रियों और अफसरों दौरे पर जा रहे हैं, उन्हें

पहले चरण के रोड शो और बिजनेस मीटिंग के बाद 52 औद्योगिक समूहों ने यूपी में निवेश में दिलचस्पी दिखाई है। इन समूहों के प्रतिनिधि इन्वेस्टर्स समिट में भी हिस्सा लेंगे। इसे सरकार की बड़ी सफलता माना जा रहा है।

52 औद्योगिक समूह फार्मास्यूटिकल, बिजनेस चैंबर, बिजनेस डेवलपमेंट, इन्वेस्टमेंट बैंक, कैपिटल मार्केट, व्हीकल मोटर इंडस्ट्री, टेक्नोलॉजी, आरएंडडी, टेलीकॉम और फूड प्रोसेसिंग जैसे सेक्टर से जुड़े हैं।

बढ़ेगा निवेश का दायरा – पहले चरण में जर्मनी के फ्रैंकफर्ट, यूके के लंदन, कनाडा के टोरंटो और मेक्सिको में रोड शो किए गए हैं। इस दौरान कई औद्योगिक समूहों से सीधी बिजनेस मीटिंग भी हुई। उन्हें जीआईएस में हिस्सा लेने का आमंत्रण भी दिया गया।

निवेश की खुली राह – यूपी में निवेश और यूपीजीआईएस में आने को लेकर कई विदेशी निवेशकों ने सहमति दी है. इनमें फार्मास्युटिकल से जुड़े धवल पटेल, इन्वेस्ट एशिया से अर्ने एर्टेबेलियन, कॉर्पोरेट फाइनेंस से जेरोएन मॉडेंस, चैंबर ऑफ लग्जमबर्ग से आदित्य शर्मा, बिजनेस यूरोप से एलेना सुआरेज, क्रेडेनाडो के स्पेशलिस्ट विम बोसमैन, ईएसएफ इंडियन एसोसिएशन के एमडी पास्कल केरनीस, लग्जमबर्ग से सेल्वाराज अलगुमलाई, चेयरमैन बीआईसीसीएंडआई से बैरन फिलिप व्लेरिक और यूरो चैंबर्स के प्रतिनिधि प्रमुख हैं।

डेयरी और पशु पालन उद्योग से जुड़े उद्यमियों के साथ विशेष सत्र के दौरान उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक की अध्यक्षता में इस साझेदारी का ब्लूप्रिंट तैयार हुआ है। जल्द ही इस पर औपचारिक मुहर लग जाएगी।

औद्योगिक विकास मंत्री नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी और लोक निर्माण मंत्री जितिन प्रसाद ने ब्रुसेल्स बेल्जियम में निवेशकों से मुलाकात की और उन्हें निवेश के लिए आमंत्रित कियासेमीकॉन और एफएबी उद्योग के लिए यूपी में अनुसंधान एवं विकास सुविधा स्थापित करने के लिए आईएमईसी उप्र सरकार के साथ सहयोग करने का इरादा रखता है। बेल्जियम की प्रमुख कम्पनी सिपेट टेक्नोलोजीस से वेस्ट मैनेजमेंट पर चर्चा हुई।

प्रदेश के वित्त मंत्री सुरेश खन्ना के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सलाहकार अवनीश अवस्थी, पूर्व मंत्री सिद्धार्थ नाथ सिंह और अन्य ने कनेक्टिकट में अमेरिकी विमान निर्माता सिकोर्स्की के मुख्य संयंत्र का दौरा किया। प्रतिनिधिमंडल ने सिकोर्स्की को उत्तर प्रदेश डिफेंस कॉरिडोर से उपकरण लाने और साथ ही उन्हें उत्तर प्रदेश ग्लोबल इन्वेस्टर समिट में भाग लेने और देश में निर्माताओं के साथ सम्मेलन आयोजित करने के लिए आमंत्रित करने की पेशकश की।

सिद्धार्थ नाथ सिंह ने कहा कि यूपी भारत की रीढ़ की हड्डी है और आवश्यक है कि भारत जब तेजी से विकसित होगा तो उसके लिए यूपी को भी विकसित करना पड़ेगा। उत्तर प्रदेश प्रगतिशील राज्यों में है, प्रदेश में बड़ी संख्या में एमएसएमई हैं। हमने कानून–व्यवस्था में सुधार किया और जमीन को माफियाओं और दबंगों से मुक्त किया और गरीबों के विकास के लिए इस्तेमाल किया। आज उ0प्र0 विकसित प्रदेशों की श्रेणी में आता जा रहा है। अंत्योदय के साथ–साथ आर्थिक दृष्टि से समग्र विकास की परिकल्पना को साकार कर रहा है।

bjpkamaljyoti@gmail.com

GLOBAL INVESTORS SUMMIT 10-12 FEBRUARY, 2023

देश समृद्ध होगा तो सबकी समृद्धि तय : मोदी

भारतीय लोकतांत्रिक प्रक्रिया में दो दिन परिणामों के रहे। जिसमें विकास, प्रगति के तरफ जागरूक मतदाताओं ने मतदान कर देश की समृद्धि के पक्ष में मतदान किया। देश का रोड मॉडल बना गुजरात मे 27 साल से चले आ रहे भाजपा को सारे रिकार्ड तोड़ते हुए जनता ने अभूतपूर्व समर्थन दिया। मा0 नरेन्द्र मोदी के रिकार्ड को भूपेन्द्र पटेल ने तोड़ दिया। हिमांचल में बदल का रिवाज जारी रखते हुए मात्र एक प्रतिशत से कम का अन्तर से सत्ता परिवर्तन हुआ तो गुजरात में प्रचण्ड बहुमत से भाजपा सत्ता में वापसी किया। इस अवसर पर भाजपा मुख्यालय दिल्ली में आयोजित आभार सभा में नरेन्द्र मोदी जी ने कहा कि आज का दिन बहुत ही ऐतिहासिक है। मैं जनता जनार्दन के सामने नतमस्तक हूं, ये जनादेश अभिभूत करने वाला है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी के नेतृत्व में भाजपा के कार्यकर्ताओं ने जो परिश्रम किया है, उसकी खुशबू आज हम चारों तरफ अनुभव कर रहे हैं। गुजरात की जनता, गुजरात के कार्यकर्ता और तमाम कार्यकर्ता जो हिमाचल प्रदेश और दिल्ली में कार्यरत रहे, उन्हें मैं तहे दिल से बहुत–बहुत बधाई देता हूं और अभिनंदन करता हूं। जहां भारतीय जनता पार्टी प्रत्यक्ष नहीं जीती, वहां भाजपा का वोट शेयर जनता जनार्दन के स्नेह का साक्षी है।

भाजपा के प्रति जनता का प्यार उपचुनावों में भी दिखा। बिहार में कुढ़नी और उत्तर प्रदेश के रामपुर में भी भाजपा जीती है। बिहार के चुनावों में भाजपा का प्रदर्शन आने वाले दिनों में भाजपा की जीत दिखा रहा है। भाजपा केवल जीत से आत्ममुदित नहीं है। वह अपने हार पर भी मंथन कर रही दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष ने इस्तीफा दे दिया। उत्तर प्रदेश जाँच समिक्षा समिति रिपोर्ट तैयार कर रही। हिमांचल प्रदेश भी पाटी व्यापक स्तार पर समिक्षा कर आगे की गति विधियां तय करेंगी।

मैं हिमाचल के हर मतदाता का भी आभारी हूं। हिमाचल के चुनाव में हम एक प्रतिशत से भी कम हार जीत का फैसला हुआ है। इतना कम अंतर हिमाचल में वर्षों से नहीं देखा गया। हिमाचल में हर पांच साल में सरकारें बदली हैं, लेकिन हर बार जीत हार में 5–6 प्रतिशत तक का अंतर रहा है। इस बार एक प्रतिशत से भी कम का अंतर जनता का प्यार दिखाता है। भाजपा भले ही हिमाचल में एक प्रतिशत से भी कम वोट के अंतर से पीछे रह गई, लेकिन विकास के लिए हमारी प्रतिबद्धता शत प्रतिशत रहेगी। हिमाचल से जुड़े हर विषय को हम पूरी मज़बूती से उठाएंगे।

मैं चुनाव आयोग का भी आभार व्यक्त करता हूं। एक भी पोलिंग बूथ पर दोबारा मतदान कराने की नौबत नहीं आई। मतलब यह कि सुख और शांति पूर्वक लोकतंत्र की मूल भावना को स्वीकार करते हुए मतदाताओं ने मतदान किया है। इसके लिए मैं चुनाव आयोग को बधाई देता हूँ।

गुजरात ने तो कमाल ही कर दिया है। चुनावों के दौरान मैंने गुजरात की जनता से कहा था, इस बार नरेन्द्र का रिकॉर्ड टूटना चाहिए। गुजरात की जनता ने तो रिकॉर्ड तोड़ने में भी रिकॉर्ड कर दिया। जनता ने गुजरात के इतिहास का सबसे प्रचंड जनादेश भाजपा को देकर नया इतिहास रच दिया है। ढाई दशक से लगातार सरकार में रहने के बावजूद ऐसा प्यार अभूतपूर्व है। लोगों ने जाति–वर्ग आदि विभाजन से ऊपर उठकर भाजपा को वोट दिया।

इस चुनाव में वोट देने वाले एक करोड़ से भी ज्यादा ऐसे मतदाता थे, जिन्होंने कांग्रेस का कुशासन नहीं देखा, केवल भाजपा की ही सरकार देखी। युवा सवाल पूछना जानते हैं। युवा तभी वोट देते हैं, जब उन्हें भरोसा दिखता है, जब उन्हें काम दिखता है। युवाओं ने भाजपा को वोट देकर संदेश दिया है कि युवाओं ने हमारे काम को जांचा परखा और उस पर भरोसा किया।

युवा भाजपा की विकास वाली योजनाएं चाहते हैं। युवाओं को न जातिवाद चाहिए, न परिवारवाद। युवाओं का दिल विजन और विकास से ही जीता जा सकता है। जब महामारी के घोर संकट के बीच बिहार में चुनाव हुए थे, तब जनता ने भाजपा को

आशीर्वाद दिया। महामारी के बाद उत्तर प्रदेश सहिततमाम राज्यों में चुनाव हुए, तब भी जनता ने भाजपा को चुना। आज जब भारत विकसित भारत की ओर बढ़ रहा है, तब भी जनता का भरोसा भाजपा पर ही है।

गुजरात के नतीजों ने सिद्ध कर दिया है कि देश के सामने जब कोई चुनौती होती है तो जनता का भरोसा भाजपा पर होता है। देश पर कोई संकट आता है तो जनता का भरोसा भाजपा पर होता है। देश बड़े लक्ष्य तय करता है तब जनता का भरोसा भाजपा पर होता है।

इन चुनावों में बहुत लोगों को जानने–पहचानने का अवसर मिल चुका है। जो लोग खुद को न्यूट्रल कहते हैं, उनके बारे में देश को जानना जरूरी है। हिमाचल प्रदेश, गुजरात और उत्तराखंड में कितने लोगों की जमानतें जब्त हुईं, उन लोगों को भी जानना चाहिए। राजनीति में सेवा भाव से एक सेवक की तरह काम करना जैसे डिस्क्वालिफिकेशन माना जा रहा है। हमारे गुजरात के सीएम भूपेंद्र पटेल दो लाख वोटों से जीते हैं, ये बहुत बड़ी बात है लेकिन ठेकेदारों का तराजू कुछ और है। इसलिए, हमें अपनी सहन शक्ति और समझ शक्ति को बढ़ाकर आगे बढ़ना है।

2002 के बाद मेरे जीवन का कोई ऐसा पल नहीं रहा, जिसकी धज्जियां नहीं उड़ाई गई हो लेकिन मैं खुद में बदलाव लाता गया, सीखता गया। आलोचनाओं ने भी हमें खूब सिखाया। हमें अपनी शक्ति को और असहन शक्ति को भी बढ़ाना है। कठोर से कठोर झूठे आरोपों को सहन करना है। मानकर चलिए, जुल्म बढ़ने वाला है, मुझ पर भी और आप पर भी क्योंकि ये अपनी हार नहीं पचा पाएंगे। 2047 में जब हम आजादी के सौ साल मनाएंगे तब हम अपने युवाओं के हाथों में विकसित भारत देकर जाएंगे।

हम यहाँ ऐसे ही नहीं पहुंचे। पांच-पांच पीढ़ियों ने जनसंघ के जमाने से अपने-आप को खपाया है, तब जाकर हम यहां पहुंचे हैं।

हम सिर्फ घोषणा करने के लिए घोषणा नहीं करते। हमारी हर घोषणा के पीछे एक रोडमैप होता है। देश आज शॉर्टकट नहीं चाहता। देश का मतदाता इतना जागरुक है कि उसे पता है – क्या उसके हित में है और क्या उसके अहित में है। वह शॉर्ट–कट की राजनीति का नुकसान जानता है। आज देश में कोई संशय नहीं कि अगर देश रहेगा, देश समृद्ध होगा तो सबकी समृद्धि तय है। हमारे पूर्वजों के पास अनुभव का अकूत ज्ञान थाा। हमारे पूर्वजों ने 'आमदनी अठन्नी, खर्चा रुपया' वाली कहावत दी है। अगर यह वाला हिसाब होगा तो क्या हाल होगा, यह हम अपने अड़ोस–पड़ोस में देख रह हैं। देश के सभी राजनीतिक दलों को सोचना होगा कि चुनावी हथकंडों से किसी का भला नहीं होगा। इसलिए, देश आज सतर्क है।

समाज के बीच खाई खोदने वालों को जनता देख भी रही है और समझ भी रही है। हमारा भविष्य फॉल्ट लाइन को गिराकर ही उज्ज्वल होगा। लड़ने के लिए सैकड़ों वजह हो सकती हैं लेकिन जुड़ने के लिए एक वजह काफी है, वह है हमारा भारत। जीने के लिए और मरने के लिए इससे बड़ी वजह और कोई नहीं हो सकती है। इसलिए हमें इंडिया फर्स्ट की भावना के साथ आगे बढ़ना है।

देश के सभी वर्गों की पहली पसंद आज भाजपा है। हमें गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों से भी खूब आशीर्वाद मिला है। एससी–एसटी के लिए आरक्षित 40 में 34 सीटों पर भाजपा को जीत मिली है। आदिवासी भाजपा को अपनी आवाज मान रहे हैं। दशकों तक जिन आदिवासियों को नजरंदाज किया गया, उनकी उम्मीदों को पूरा करने में हम लगातार जुटे हुए हैं। भाजपा ने आदिवासी कल्याण के लिए बजट बढ़ाया और विकास को गति दी। हम देश भर में आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों के म्यूजियम बनाकर उन्हें सम्मान दे रहे हैं।

अगर कोई ईमानदारी से आत्म चिंतन करे तो आजादी के बाद से पहली बार आज देश में पहली ऐसी सरकार है जो महिलाओं की समस्याएं और जरूरतें समझने का प्रयास कर रही है और उनके लिए योजनाएं बनाने का काम कर रही है। हर महिला के कल्याण और उनके जीवन के उत्थान के लिए जितना भाजपा की सरकार ने किया है, उतना किसी ने भी नहीं किया। भाजपा के आठ साल के काम अन्य सरकारों के पचास साल के काम से भी ज्यादा है। हम यहाँ ऐसे ही नहीं पहुंचे। पांच–पांच पीढ़ियों ने जनसंघ के जमाने से अपने–आप को खपाया है, तब जाकर हम यहां पहुंचे हैं। भाजपा के लिए लाखों समर्पित कार्यकर्ताओं ने अपना जीवन खपा दिया है। व्यक्तिगत सुख, आकांक्षाएं और खुशियों को तिलांजलि देकर भाजपा कार्यकर्ता समाज और देश को सशक्त करने के लिए जुटे रहते हैं। भाजपा अपने कार्यकर्ताओं की अथाह संगठन शक्ति पर भरोसा करके अपनी रणनीति बनाती है और इसमें सफल होती है। उतार–चढ़ाव हमारे राजनीतिक जीवन में आए हैं, लेकिन हमने आदर्शों और मूल्यों पर अडिग रहकर दिखाया है, कभी अपनी विचारधारा के साथ समझौता नहीं किया।

पिछले आठ वर्षों में देश में कार्य और कार्यशैली का भी बदलाव आया है। हमने गरीबों के लिए घर, शौचालय, सिलेंडर जैसी मूल सुविधाएं जुटाईं। आज जो भी सरकारी लाभ है, वह हर वर्ग के हकदार तक तेजी से पहुंचाने का प्रयास हो रहा है। पूरा का पूरा पहुंचे, इसके लिए टेक्नोलॉजी का उपयोग किया जाता है। किस वर्ग या समुदाय में कितने वोट हैं, इस आधार पर हम सरकार नहीं चलाते। इसके हमें सकारात्मक नतीजे देखने को मिल रहे हैं। बड़े–बड़े एक्सपर्ट कह रहे हैं कि भारत में गरीबी कम हो रही है। देश ने पिछले आठ वर्षों में गरीबों तक मूलभूत सुविधाएं पहुंचाने के साथ ही, संसाधनों का विकास भी किया है। महिलाओं के मुद्दे हमारे लिए चुनावी मुद्दे नहीं है, बल्कि उसे पूरा करना हमारा संकल्प है। हमें महिला सशक्तिकरण के लिए इतना कुछ करने का मौका देश की जनता ने दिया है।

आने वाला समय हम सबके लिए महत्वपूर्ण है। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास की भावना से काम करना है।

विजय विकास की जीत : नड्डा

भाजपा सभी चुनावों को पूरी ताकत से लड़ती है। दो प्रदेशों, नगर निगम दिल्ली के चुनाव में परिणाम आने के बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा जी ने जो बातें कहीं वो कार्यकर्ताओं के लिए पाथेय है उन्होंने कहा कि गुजरात ने तो कमाल ही कर दिया है। चुनावों के दौरान मैंने गुजरात की जनता से कहा था, इस बार नरेन्द्र का रिकॉर्ड टूटना चाहिए। गुजरात की जनता ने तो रिकॉर्ड तोड़ने में भी रिकॉर्ड कर दिया। जनता ने गुजरात के इतिहास का सबसे प्रचंड जनादेश भाजपा को देकर नया इतिहास रच दिया है। ढाई दशक से लगातार सरकार में रहने के बावजूद ऐसा प्यार अभूतपूर्व है। लोगों ने जाति–वर्ग आदि विभाजन से ऊपर उठकर भाजपा को वोट दिया।

इस चुनाव में वोट देने वाले एक करोड़ से भी ज्यादा ऐसे मतदाता थे, जिन्होंने कांग्रेस का कुशासन नहीं देखा, केवल भाजपा की ही सरकार देखी। युवा सवाल पूछना जानते हैं। युवा तभी वोट देते हैं, जब उन्हें भरोसा दिखता है, जब उन्हें काम दिखता है। युवाओं ने भाजपा को वोट देकर संदेश दिया है कि युवाओं ने हमारे काम को जांचा परखा और उस पर भरोसा किया।

युवा भाजपा की विकास वाली योजनाएं चाहते हैं। युवाओं को न जातिवाद चाहिए, न परिवारवाद। युवाओं का दिल विजन और विकास से ही जीता जा सकता है। जब महामारी के घोर संकट के बीच बिहार में चुनाव हुए थे, तब जनता ने भाजपा को आशीर्वाद दिया। महामारी के बाद उत्तर प्रदेश सहिततमाम राज्यों में चुनाव हुए, तब भी जनता ने भाजपा को चुना। आज जब भारत विकसित भारत की ओर बढ़ रहा है, तब भी जनता का भरोसा भाजपा पर ही है।

गुजरात के नतीजों ने सिद्ध कर दिया है कि देश के सामने जब कोई चुनौती होती है तो जनता का भरोसा भाजपा पर होता है। देश पर कोई संकट आता है तो जनता का भरोसा भाजपा पर होता है। देश बड़े लक्ष्य तय करता है तब जनता का भरोसा भाजपा पर होता है।

इन चुनावों में बहुत लोगों को जानने–पहचानने

भारतीय जनता पार्टी को मिला जनसमर्थन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह ऐसे समय में आया है, जब भारत अमृत काल में प्रवेश कर चुका है। यह दर्शाता है कि आने वाले 25 साल केवल विकास की राजनीति के हैं। भाजपा को मिला समर्थन, न आकांक्षाओं और युवा सोच का प्रतीक है। लोगों ने भाजपा को वोट दिया क्योंकि भाजपा ने हर सुविधा को हर परिवार तक पहुंचाया। भाजपा देश के हित में बड़े से बड़े और कड़े से कड़े फैसले लेने का दम रखती है। परिवारवाद और भ्रष्टाचार के खिलाफ जन–आक्रोश लगातार बढ़ रहा है। मैं इस बात को स्वस्थ लोकतंत्र के लिए साकार रूप में देखता हूं।

का अवसर मिल चुका है। जो लोग खुद को न्यूट्रल कहते हैं, उनके बारे में देश को जानना जरूरी है। हिमाचल प्रदेश, गुजरात और उत्तराखंड में कितने लोगों की जमानतें जब्त हुईं, उन लोगों को भी जानना चाहिए। राजनीति में सेवा भाव से एक सेवक की तरह काम करना जैसे डिस्क्वालिफिकेशन माना जा रहा है। हमारे गुजरात के सीएम भूपेंद्र पटेल दो लाख वोटों से जीते हैं, ये बहुत बड़ी बात है लेकिन ठेकेदारों का तराजू कुछ और है। इसलिए, हमें अपनी सहन शक्ति और समझ शक्ति को बढ़ाकर आगे बढ़ना है।

2002 के बाद मेरे जीवन का कोई ऐसा पल नहीं रहा, जिसकी धज्जियां नहीं उड़ाई गई हो लेकिन मैं खुद में बदलाव लाता गया, सीखता गया। आलोचनाओं ने भी हमें खूब सिखाया। हमें अपनी शक्ति को और असहन शक्ति को भी बढ़ाना है। कठोर से कठोर झूठे आरोपों को सहन करना है। मानकर चलिए, जुल्म बढ़ने वाला है, मुझ पर भी और आप पर भी क्योंकि ये अपनी हार नहीं पचा पाएंगे। 2047 में जब हम आजादी के सौ साल मनाएंगे तब हम अपने युवाओं के हाथों में विकसित भारत देकर जाएंगे।

हम सिर्फ घोषणा करने के लिए घोषणा नहीं करते। हमारी हर घोषणा के पीछे एक रोडमैप होता है। देश आज शॉर्टकट नहीं चाहता। देश का मतदाता इतना जागरुक है कि उसे पता है – क्या उसके हित में है और क्या उसके अहित में है। वह शॉर्ट–कट की राजनीति का नुकसान जानता है। आज देश में कोई संशय नहीं कि अगर देश रहेगा, देश समृद्ध होगा तो सबकी समृद्धि तय है। हमारे पूर्वजों के पास अनुभव का अकूत ज्ञान थाा। हमारे पूर्वजों ने 'आमदनी अठन्नी, खर्चा रुपया' वाली कहावत दी है। अगर यह वाला हिसाब होगा तो क्या हाल होगा, यह हम अपने अड़ोस–पड़ोस में देख रह हैं। देश के सभी राजनीतिक दलों को सोचना होगा कि चुनावी हथकंडों से किसी का भला नहीं होगा। इसलिए, देश आज सतर्क है।

समाज के बीच खाई खोदने वालों को जनता देख भी रही है और समझ भी रही है। हमारा भविष्य फॉल्ट लाइन को गिराकर ही उज्ज्वल होगा। लड़ने के लिए सैकड़ों वजह हो सकती हैं लेकिन जुड़ने के लिए एक वजह काफी है, वह है हमारा भारत। जीने के लिए और मरने के लिए इससे बड़ी वजह और कोई नहीं हो सकती है। इसलिए हमें इंडिया फर्स्ट की भावना के साथ आगे बढ़ना है।

देश के सभी वर्गों की पहली पसंद आज भाजपा है। हमें गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों से भी खूब आशीर्वाद मिला है। एससी–एसटी के लिए आरक्षित 40 में 34 सीटों पर भाजपा को जीत मिली है। आदिवासी भाजपा को अपनी आवाज मान रहे हैं। दशकों तक जिन आदिवासियों को नजरंदाज किया गया, उनकी उम्मीदों को पूरा करने में हम लगातार जुटे हुए हैं। भाजपा ने आदिवासी कल्याण के लिए बजट बढ़ाया और विकास को गति दी। हम देश भर में आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों के म्यूजियम बनाकर उन्हें सम्मान दे रहे हैं।

अगर कोई ईमानदारी से आत्म चिंतन करे तो आजादी के बाद से पहली बार आज देश में पहली ऐसी सरकार है जो महिलाओं की समस्याएं और जरूरतें समझने का प्रयास कर रही है और उनके लिए योजनाएं बनाने का काम कर रही है। हर महिला के कल्याण और उनके जीवन के उत्थान के लिए जितना भाजपा की सरकार ने किया है, उतना किसी ने भी नहीं किया। भाजपा के आठ साल के काम अन्य सरकारों के पचास साल के काम से भी ज्यादा है।

हम यहाँ ऐसे ही नहीं पहुंचे। पांच–पांच पीढ़ियों ने जनसंघ के जमाने से अपने–आप को खपाया है, तब जाकर हम यहां पहुंचे हैं। भाजपा के लिए लाखों समर्पित कार्यकर्ताओं ने अपना जीवन खपा दिया है। व्यक्तिगत सुख, आकांक्षाएं और खुशियों को तिलांजलि देकर भाजपा कार्यकर्ता समाज और देश को सशक्त करने के लिए जुटे रहते हैं। भाजपा अपने कार्यकर्ताओं की अथाह संगठन शक्ति पर भरोसा करके अपनी रणनीति बनाती है और इसमें सफल होती है। उतार–चढ़ाव हमारे राजनीतिक जीवन में आए हैं, लेकिन हमने आदर्शों और मूल्यों पर अडिग रहकर दिखाया है, कभी अपनी विचारधारा के साथ समझौता नहीं किया।

पिछले आठ वर्षों में देश में कार्य और कार्यशैली का भी बदलाव आया है। हमने गरीबों के लिए घर, शौचालय, सिलेंडर जैसी मूल सुविधाएं जुटाईं। आज जो भी सरकारी लाभ है, वह हर वर्ग के हकदार तक तेजी से पहुंचाने का प्रयास हो रहा है। पूरा का पूरा पहुंचे, इसके लिए टेक्नोलॉजी का उपयोग किया जाता है। किस वर्ग या समुदाय में कितने वोट हैं, इस आधार पर हम सरकार नहीं चलाते। इसके हमें सकारात्मक नतीजे देखने को मिल रहे हैं। बड़े–बड़े एक्सपर्ट कह रहे हैं कि भारत में गरीबी कम हो रही है। देश ने पिछले आठ वर्षों में गरीबों तक मूलभूत सुविधाएं पहुंचाने के साथ ही, संसाधनों का विकास भी किया है। महिलाओं के मुद्दे हमारे लिए चुनावी मुद्दे नहीं है, बल्कि उसे पूरा करना हमारा संकल्प है। हमें महिला सशक्तिकरण के लिए इतना कुछ करने का मौका देश की जनता ने दिया है। आने वाला समय हम सबके लिए महत्वपूर्ण है। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास की भावना से काम करना है। आइये हम सब मिल कर विकसित भारत के अभियान में जुड़ें।

विकास मॉडल में जनता के अटूट विश्वास की जीत

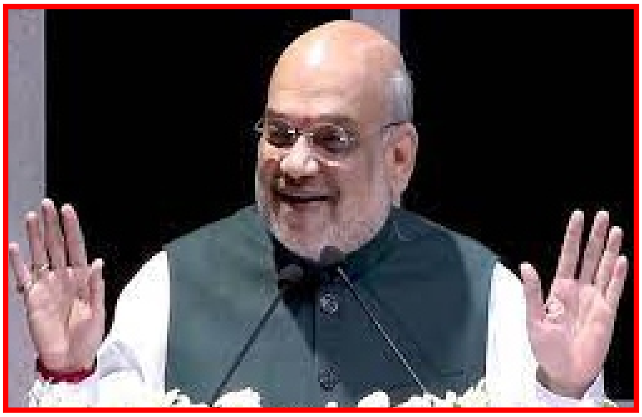

माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री और भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री अमित शाह जी ने गुजरात में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता को मिली प्रचंड, ऐतिहासिक और भव्य जीत को गुजरात की जनता की जीत बताते हुए कहा कि गुजरात में भारतीय जनता पार्टी की यह जीत माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकास मॉडल में जनता के अटूट विश्वास की जीत है।

गुजरात में भारतीय जनता पार्टी की अब तक की सबसे बड़ी और लगातार सातवीं बार जीत दर्ज करने पर श्री अमित शाह जी ने सिलसिलेवार ट्वीट करते हुए कहा कि गुजरात ने हमेशा इतिहास रचने का काम किया है। पिछले दो दशक में मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा ने गुजरात में विकास के सभी रिकॉर्ड तोड़े और आज गुजरात की जनता ने भाजपा को आशीर्वाद देकर जीत के सभी रिकॉर्ड तोड़ दिये। यह नरेन्द्र मोदी जी के विकास मॉडल में जनता के अटूट विश्वास की जीत है।

विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि गुजरात ने खोखले वादे, रेवड़ी व तुष्टिकरण की राजनीति करने वालों को नकार कर विकास और जनकल्याण को चरितार्थ करने वाली नरेन्द्र मोदी जी की भाजपा को अभूतपूर्व जनादेश दिया है। इस प्रचंड जीत ने दिखाया है कि हर वर्ग चाहे महिला हो, युवा हो या किसान हो सभी पूरे दिल से भाजपा के साथ हैं।

इस ऐतिहासिक जीत पर गुजरात की जनता को नमन करते हुए कहा कि माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व और जेपी नड्डा जी की अध्यक्षता में मिली इस भव्य जीत पर मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल जी, प्रदेश अध्यक्ष सीआर पाटिल जी और अथक परिश्रम करने वाले गुजरात भाजपा के सभी कार्यकर्ताओं को बधाई देता हूँ।

गुजरात की प्रचण्ड विजय, सुशासन की विजय : भूपेन्द्र

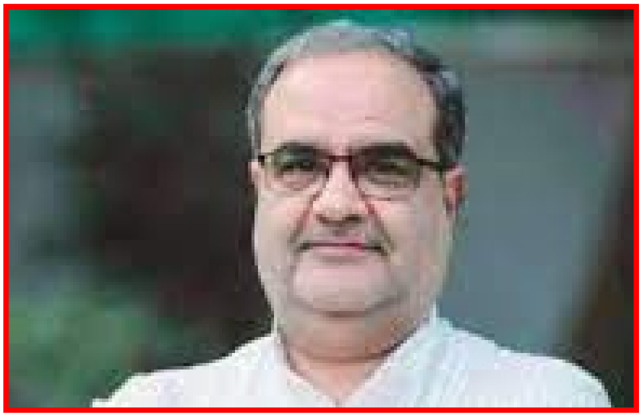

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने गुजरात विधानसभा के चुनाव में भाजपा को मिली प्रचंड विजय के लिए जनता और समर्पित कार्यकर्ताओं का कोटि–कोटि अभिनंदन करते हुए उन्हें बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह विराट विजय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी के कुशल नेतृत्व एवं मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल जी के जनकल्याण के संकल्प एवं सुशासन की जीत है।

उत्तर प्रदेश के मैनपुरी लोकसभा तथा रामपुर व खतौली उपचुनावों के परिणाम पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश के रामपुर विधानसभा उपचुनाव में आजादी के बाद पहली बार भाजपा को विजय मिली है। यह विजय पार्टी की सबका साथ सबका विश्वास और सबका प्रयास की नीति पर जनता की मुहर है। पार्टी प्रत्याशी श्री आकाश सक्सेना को विजय का आशीर्वाद देने के लिए रामपुर की जनता का आभार व्यक्त करता हूं।

श्री चौधरी ने कहा कि कि मैनपुरी लोकसभा और खतौली विधानसभा के उपचुनाव के परिणाम हमारी अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहे है। हम जनादेश का सम्मान करते है। मैनपुरी में स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव जी के बड़े कद व व्यक्तित्व का लाभ सपा प्रत्याशी को मिला है। मै श्रीमती डिंपल यादव जी को बधाई देता हूं।

जनादेश का सम्मान करते है और जहां परिणाम हमारी अपेक्षा के अनुरूप नहीं आए है वहां की समीक्षा करते हुए हम आगे की योजना बनायेगे।

निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया को पूर्ण कराने के लिए चुनाव आयोग तथा चुनाव में लगे सभी कर्मियों को भी धन्यवाद दिया । साथ ही सभी पार्टी कार्यकर्ताओं का भी अभिनंदन करता हूं, जिन्होंने पार्टी का समर्पित सिपाही बनकर चुनाव में अथक परिश्रम कर कार्य किया।

नगर सुशोभन अभियान

किसी भी राज्य के शहर मुखौटा होते हैं। शहरों की सुन्दरता और व्यवस्थित व सुगम जीवनशैली को देखकर ही बाहरी व्यक्ति आकर्षित होता है और वैसी ही धारणा बनाता है। उ0प्र0 में शहरों की साफ–सफाई एवं सौन्दर्यीकरण का कार्य विगत 5–6 महीनों से लगातार चल रहा है। सभी के सहयोग से इसके बेहतर परिणाम भी आये हुए हैं, लेकिन अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है। मैन और मशीन का समुचित प्रयोग कर सफाई को एक स्थायी रूप देना है, जिससे नगरीय जीवन में सुखद परिवर्तन आ सके।

नगर विकास मंत्री श्री ए0के0 शर्मा 01 दिसम्बर को प्रदेश के सभी निकायों में कूड़ा स्थलों व गंदगी को साफ करने में चलाये गये ''प्रतिबद्धः 75 घंटे, 75 जिले, 750 निकाय'' अभियान की सफलता तथा कूड़ा स्थलों को साफ कर सुन्दरीकरण करने के लिए 05 दिसम्बर से चलाये गये ''नगर सुशोभन अभियान'' निकाय अधिकारियों के साथ वर्चुअल समीक्षा की। उन्होंने 75 घंटे सफाई अभियान की सफलता पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि इस दौरान प्रदेश के सभी 750 निकायों में 3100 कूड़ा स्थलों को चिन्हित कर पूरी तरह से साफ किया गया है। इस अभियान से 1710621 केजी गीला कूड़ा, 2190081 केजी सूखा कूड़ा तथा 1453949 केजी सी एण्ड डी वेस्ट को अलग कर वैज्ञानिक रूप से निस्तारित किया गया। इस दौरान सफाई अभियान में छोटे–बड़े 5903 वाहन तथा 29970 मैनपावर का उपयोग किया गया। यहां पर निरन्तर साफ–सफाई बनाये रखने के लिए सुन्दरीकरण का कार्य कराया जा रहा है।

सफाई अभियान में 829603 लोगों ने अपनी जन–भागीदारी दी। इसमें 28309 स्वच्छ वातावरण प्रोत्साहन समिति के सदस्य, 42163 विद्यार्थी, 2110 एनसीसी के सदस्य, 1329 एनजीओ के सदस्य, 11246 सीएसओ के सदस्य, 2916 मीडिया पार्टनर एवं 15124 जन–प्रतिनिधियों ने मिलकर इस अभियान को ऐतिहासिक सफलता प्रदान की। इसी प्रकार स्वच्छ भारत मिशन के तहत GVPFREEUP के अन्तर्गत सोशल मीडिया के माध्यम से 08 लाख से अधिक इस प्रकार कुल 16 लाख से अधिक लोगों द्वारा सफाई अभियान में प्रतिभाग किया गया।

खोदी गयी शहरों की सभी सड़कों को 12 दिसम्बर से पहले पूरी तरह से सही करना होगा, जिससे कि लोगों को आने–जाने में किसी भी तरह की परेशानी न हो। इस कार्य में देरी पर सम्बंधित के खिलाफ सख्त कार्यवाही की

जायेगी। उन्होंने कहा कि सभी शहरों के चौराहों का सुन्दरीकरण कराया जाय। जेब्रा क्रासिंग एवं डिवाइडर की पेंटिंग करायी जाय। चौराहों से अवैध होर्डिंग एवं पोस्टर–बैनर शीघ्र हटाई जाय। उन्होंने कहा कि शहरों की साफ–सफाई एवं स्वच्छता का अभियान निरंतर चलता रहे और एक भी कूड़ा स्थल न दिखे। साफ किये गये कूड़ा स्थलों के कुछ स्थानों पर शाम के समय संगीत एवं बैण्ड पार्टी का भी आयोजन किया जाय। निर्देश देते हुए उन्होंने कहा कि कुशीनगर के हाटा में आज शाम ही ऐसे स्थान पर बैण्ड/संगीत कार्यक्रम किया जाय। उन्होंने कहा कि विदेशों में भी ऐसी परम्परा है। शाम को स्थानीय बैण्ड एवं संगीत बजाने वाले इस प्रकार के कार्यक्रम 2–3 घंटे का करते हैं।

सुनिश्चिति करने तथा उन्हें अभियान का अम्बेस्डर बनाने को भी कहा। उन्होंने कहा कि लोगों की प्रतिक्रिया आ रही है कि कूड़ा स्थलों एवं गंदगी के हटने से लोगों के जीवन में, वहां की जमीन एवं फ्लैट की कीमतों में बढ़ोत्तरी हुई है। सभी कूड़ा स्थलों को डस्टफ्री बनाने के लिए घास लगायी जाय तथा वेन्डर जोन भी बनाए जाएं। जहां पर आवश्यक हो, लोगों के लिए सेल्फी प्वाइंट एवं गरीबों की सहायता के लिए नेकी की दीवार भी बनायी जाय। कार्य ऐसे किये जाएं जो जमीन से जुड़े हुए हों और दीर्घकालीक बनकर वहां की परम्परा का रूप ले सकें। उन्होंने कहा कि कूड़ा स्थलों का लोग दूसरे रूप में प्रयोग न करने लग जाएं, इसका भी ख्याल रखें। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि सभी निकाय अधिकारी अपने द्वारा किये गये डॉक्यूमेंटेशन जरूर कराएं और कार्यों की फोटो गैलरी भी बनाएं।

प्रदेश के नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री श्री ए0के0 शर्मा ने कहां की प्रदेश का वातावरण अच्छा हो, लोगों को स्वच्छ एवं स्वस्थ नगरीय जीवन मिले, इसके लिए प्रदेश सरकार गंभीरता से प्रयास कर रही है। प्रदेश के सभी निकायों से कूड़ा स्थलों एवं गंदगी के ढेर को समाप्त किया जा रहा है। विगत 75 घंटों के अभियान में ऐसे कूड़ा स्थलों को हटाने का ऐतिहासिक कार्य किए गए और नागरिकों को गंदगी से मुक्ति मिली है।

नगर विकास मंत्री श्री ए0के0 शर्मा जी कल सायं 7:30 बजे लखनऊ के मखदूमपुर मलेशिया मऊ गांव में साफ किए गए कूड़ा स्थल के सुंदरीकरण के कार्य का निरीक्षण किया। इस दौरान नगर आयुक्त ने उन्हें बताया कि यह क्षेत्र अभी नगर निगम की सीमा में शामिल हुआ है और यह लखनऊ नगर निगम का अंतिम छोर भी है, जहां पर जाकर सफाई का कार्य किया गया है।

सफाई का कार्य एवं कूड़ा स्थलों व गंदगी को हटाने का कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ है। इसे निरंतर बनाए रखना है, जिससे कि शहरी जीवन एवं वातावरण में अमूल चूल परिवर्तन हो सके। उन्होंने कहा कि सभी निकाय अपने यहां के चौराहों का सुंदरीकरण कराए, जेब्रा क्रॉसिंग एवं डिवाइडर की पेंटिंग कराए, चौराहों से अवैध होर्डिंग,बैनर को भी शीघ्र हटाया जाए। स्थानीय लोगों ने मंत्री जी को बताया कि इस स्थान पर बहुत गंदगी रहती थी। यहां पर सांस लेना और यहां से निकलना मुश्किल होता था। मंत्री जी ने कहा कि यह स्थान दुबारा कूड़ा स्थल के रूप में परिवर्तित न हो, इसके लिए स्थानीय लोगों को भी प्रयास करने होंगे। इस पर स्थानीय निवासी राजेश यादव ने साफ सफाई व्यवस्था को बनाए रखने की जिम्मेदारी ली।

मंत्री जी ने कहा कि हमारे सफाई कर्मी प्रातः 5:00 बजे से उठकर शहर के वातावरण को साफ सुथरा बनाने का प्रयास करते हैं। इसमें सभी शहरवासियों का भी सहयोग जरूरी है। उन्होंने शहरवासियों से भी अपील की है कि साफ सफाई में अपना सहयोग प्रदान करें। अपने घरों से समय से कूड़ा निकाले और इधर उधर न फेंके। कूड़े को कूड़ादान में डाले या कूड़ा गाड़ी को उपलब्ध कराए। उन्होंने यहां पर कराए गए सुंदरीकरण की प्रशंसा की और सफाई कर्मियों के साथ सेल्फी प्वाइंट में शेल्फी खिंचवाई। उन्होंने यहां पर रोपे गए पौधो के देखभाल करने के भी निर्देश दिए।

महापौर लखनऊ श्रीमती संयुक्ता भाटिया ने कहा की प्रदेश का नगरीय परिवेश मंत्री जी के नेतृत्व में आगे बढ़ रहा है और नगरों का तेजी से विकास हो रहा है। अभी लखनऊ शहर को स्वच्छ वायु के लिए देशभर में प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। उन्होंने कहा कि यहां के 142 कूड़ा स्थलों को भी साफ कर दिया गया है। यह अंतिम कूड़ा स्थल था, जिसे साफ किया गया है। अब यहां पर कोई दुबारा कूड़ा न डाले इसकी जिम्मेदारी यहां के लोगो को लेनी होगी। यहां के सभी लोगो को इसकी चिंता करनी होगी। सभी के सहभागिता से ही शहरों को भव्य व स्वच्छ बनाया जा सकता है।

लोक कल्याणकारी अनुपूरक अर्थ संकल्प

अनुपूरक बजट में 14 हजार करोड़ रुपये की नई योजनाएं शामिल की गई हैं। अवस्थापना एवं औद्योगिक एवं शहरी विकास के साथ–साथ स्वास्थ्य, शिक्षा और ऊर्जा सेक्टर के लिए भारी–भरकम राशि का प्रावधान किया गया। औद्योगिक पार्कों के विकास के लिए 8 हजार करोड़ और पीडब्ल्यूडी को सड़कें बनाने के लिए 2550 करोड़ रुपये अतिरिक्त बजट प्रस्तावित किया गया।

प्रदेश में अवस्थापना, उद्योग व शहरी विकास की रफ्तार तेज की जाएगी। योगी सरकार ने अपने दूसरे कार्यकाल के 2022–23 के पहले अनुपूरक बजट में अवस्थापना, औद्योगिक और शहरी विकास को खास तवज्जो दी है। स्वास्थ्य, शिक्षा और बिजली को भी तरजीह दी गई है। वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने सोमवार को विधानसभा में 33770 करोड़ रुपये का अनुपूरक बजट पेश किया जबकि विधान परिषद में केशव प्रसाद मौर्य ने अनुपूरक बजट पेश किया।

इसमें अवस्थापना एवं औद्योगिक एवं शहरी विकास के साथ–साथ स्वास्थ्य, शिक्षा और ऊर्जा सेक्टर के लिए भारी–भरकम राशि का प्रावधान किया गया। औद्योगिक पार्कों के विकास के लिए 8 हजार करोड़ और पीडब्ल्यूडी को सड़कें बनाने के लिए 2550 करोड़ रुपये अतिरिक्त बजट प्रस्तावित किया गया। जिन शहरों की आबादी काफी घनी है, वहां सुनियोजित विकास के लिए नए शहरों के मद में 4000 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है।

अनुपूरक बजट में 14 हजार करोड़ रुपये की नई योजनाएं शामिल की गई हैं। इस अनुपूरक बजट से साफ हो गया है कि प्रदेश में निवेश बढ़ाने, औद्योगिक विकास के लिए जरूरी ढांचागत सहूलियतें मुहैया कराने और स्टार्टअप को प्रोत्साहन योगी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। प्रदेश में निजी निवेशकर्ताओं के औद्योगिक क्षेत्रों, औद्योगिक पार्कों और औद्योगिक हब के निर्माण के लिए औद्योगिक विकास प्राधिकरणों को 8 हजार करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है। यह राशि बतौर ऋण मिलेगी। राज्य सड़क निधि के अंतर्गत सड़कों के अनुरक्षण के लिए 500 करोड़ रुपये और निर्माण व सुदृढ़ीकरण के लिए 1000 करोड़ रुपये मिलेंगे। इस वर्ष दोबारा सत्ता में आने के बाद योगी सरकार ने 26 मई को यूपी का 615518.97 करोड़ रुपये का बजट पेश किया था।

- 10 जिलों में न्यायालय परिसरों के निर्माण के लिए 400 करोड़
- मुख्यमंत्री विवेकाधीन अनुदान के लिए 150 करोड़
- ईको टूरिज्म के विकास के लिए 20 करोड़
- ांगनबाड़ी केंद्रों के अपग्रेडेशन के लिए 16.93 करोड़
- आंगनबाड़ी केंद्रों के निर्माण के लिए 41.40 करोड़
- ग्रीन इंडिया मिशन के लिए 36.19 करोड़
- कुकरैल नाइट सफाई पार्क की स्थापना के लिए 1 करोड़
- निजी उपभोक्ताओं को 1 जनवरी 2022 से टैरिफ के आधार पर 50 प्रतिशत की छूट मद में 1250 करोड़
- जवाहरपुर तापीय विद्युत परियोजना के लिए 100 करोड़
- 1000 मेगावाट घाटमपुर तापीय विद्युत परियोजना की स्थापना के लिए 300 करोड़
- पनकी परियोजना की लिए 100 करोड़
- स्टेडियमों, बहुद्देशीय हॉलों और छात्रावासों के अनुरक्षण के लिए 15 करोड़

- खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स के आयोजन के लिए 20 करोड़
- गन्ना विकास परिषद के संपर्क मार्गों के लिए 155 करोड़
- सहकारी चीनी मिलों के लिए 20 करोड़
- सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के लिए उपकरण खरीद के लिए 20 करोड़
- ामाजिक वानिकी योजना (जिला योजना) के लिए 174 करोड़
- पौधशाला प्रबंधन योजना के लिए 45 करोड़
- 150 राजकीय आईटीआई के उन्नयन के लिए 175 करोड़
- राष्ट्रीय शिक्षुता प्रोत्साहन योजना के संचालन के लिए 8 करोड़

सूचना विभाग को मिले 804 करोड़

सूचना विभाग को सरकार की योजनाओं के प्रचार–प्रसार और विज्ञापन के लिए 655 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया गया है। वहीं, लेखन प्रकाशन सहित अन्य मदों के खर्च सहित विभाग को कुल 804.20 करोड़ रुपये का बजट दिया गया है। है। उत्तर प्रदेश स्टेट डाटा सेंटर के विस्तारीकरण के लिए 15.32 करोड़ रुपये की व्यवस्था है।

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के लिए 296 करोड़

ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट–2023 के आयोजन के लिए 296.56 करोड़ रुपये दिए जाएंगे। उत्तर प्रदेश में होने वाली जी–20 सम्मेलन के बैठकों के लिए भी 25 करोड़ का प्रावधान किया गया है।

इलेक्ट्रानिक्स विनिर्माण नीति में सब्सिडी के लिए 327 करोड़

इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण नीति के तहत भूमि की प्रचलित दरों में दी जाने वाली छूट की भरपाई और पात्र इकाइयों को प्रोत्साहन के लिए 327 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया गया है। मेसर्स एचसीएल आईटी सिटी (लखनऊ) प्राइवेट लिमिटेड को उत्तर प्रदेश सूचना प्रौद्योगिकी एवं स्टार्टअप नीति–2016 के अंतर्गत ब्याज उपादान के लिए 31 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है।

टैबलेट व स्मार्टफोन वितरण के लिए 300 करोड़

स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना के अंतर्गत टैबलेट

व स्मार्टफोन के वितरण के लिए 300 करोड़ रुपये दिए गए हैं। मुख्यमंत्री फेलोशिप कार्यक्रम के संचालन के लिए 182 करोड़ रुपये दिए गए हैं। अशासकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे अलाभिक समूह एवं कमजोर वर्ग के कक्षा–1 से 8 तक के बच्चों की शिक्षा पर आने वाले व्यय के मद में 177 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है।

सलाहकार संस्था के लिए 14 करोड़

प्रदेश की अर्थव्यवस्था को दस खरब अमेरिकी डॉलर का बनाने की विस्तृत कार्य योजना तैयार कर रही परामर्श दात्री संस्था को भुगतान के लिए 14.35 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। इसके अलावा मुख्यमंत्री फैलोशिप कार्यक्रम के संचालन के लिए 1.82 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

श्रम विभाग : अटल आवासीय विद्यालयों के लिए 172 करोड़

अब अटल आवासीय विद्यालयों में और तेजी से काम होगा। अप्रैल से यहां सरकार प्रवेश शुरू करने की तैयारी कर रही है। इसके लिए अनुपूरक बजट में 172 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा उप्र भवन एवं अन्य सनिर्माण कर्मकार कल्याण निधि की जमा धनराशि वापस करने के लिए 30.75 करोड़ रुपये भी स्वीकृत किए गए हैं। श्रम सेवायोजन में मॉडल कॅरिअर सेंटरों की स्थापना के 68.23 लाख रुपये स्वीकृत किए गए।

स्टार्टअप के लिए 100 करोड़

इन्क्युबेटर्स को बढ़ावा देने और स्टार्टअप को संगठित करने के लिए 100 करोड़ रुपये की व्यवस्था अनुपूरक बजट में की गई

महाकुंभ–2025 के लिए 521 करोड़

अनुपूरक बजट में स्मार्ट सिटी मिशन के लिए 899 करोड़ रुपये दिए गए हैं। प्रयागराज में होने वाले महाकुंभ–2025 के आयोजन के लिए 521.55 करोड़ रुपये का प्रावधान है।

पीएम गति शक्ति योजना के लिए 200 करोड़ का रिवॉल्विंग फंड

पीएम गति शक्ति योजना के तहत संचालित योजनाओं के लिए रिवॉल्विंग फंड की स्थापना के लिए 200 करोड़ रुपये की व्यवस्था हुई है।

स्वास्थ्य सेवाओं के लिए भी खोला खजाना

अनुपूरक बजट में परिवार कल्याण विभाग के लिए 3576 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया गया है। मेडिकल कॉलेजों के निर्माण के लिए 246 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है।

राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के तहत संचालित योजनाओं को लागू करने के लिए 1004 करोड़ रुपये दिए गए हैं।

बसों की खरीद के लिए 200 करोड़, वी के लिए 100 करोड़

उत्तर प्रदेश इलेक्ट्रॉनिक्स वाहन विनिर्माण एवं गतिशीलता नीति–2022 के अंतर्गत इलेक्ट्रिक वाहनों पर सब्सिडी के लिए 100 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है। उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम में 100 नई बसों की खरीद के लिए 200 करोड़ रुपये मिले हैं।

ट्रांसमिशन लाइन के लिए 908 करोड़

सौर ऊर्जा नीति–2017 के तहत बुंदेलखंड और पूर्वांचल क्षेत्र में स्थापित ग्रिड संयोजित सौर पॉवर प्लांट से बिजली निकासी के लिए ट्रांसमिशन लाइन तैयार कराने को 908 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

पिछड़े वर्ग की पुत्रियों की शादी के लिए 75 करोड़

पिछड़े वर्ग के निर्धन व्यक्तियों की पुत्रियों की शादी केलिए 75 करोड़ रुपये दिए गए हैं। इस तरह से व्यक्तिगत शादी अनुदान योजना को बजट मिलने से यह पुनः बहाल हो गई है।

आरटी : शुल्क प्रतिपूत का रास्ता साफ, 177 करोड़ रुपये के बजट का प्राविधान

प्रदेश के निजी विद्यालयों में शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई) के तहत पढ़ रहे बच्चों की बकाया फीस प्रतिपूर्ति के भुगतान का रास्ता साफ हो गया है। प्रदेश सरकार ने विधानसभा में सोमवार को पेश अनुपूरक बजट में आरटीई के तहत पढ़ रहे बच्चों की शिक्षा पर खर्च के लिए 1,77,41,70,000 रुपये की और राशि का प्राविधान किया है।

यह धनराशि अशासकीय प्राथमिक, उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ रहे अलाभिक समूह व कमजोर वर्ग के कक्षा एक से आठ तक के बच्चों की शिक्षा पर आने वाले खर्च के लिए अतिरिक्त रूप से देने का प्रस्ताव बजट में है। गौरतलब है कि पिछले तीन वर्ष से प्रदेश में निजी स्कूलों को आरटीई के तहत पढ़ रहे बच्चों की शुल्क प्रतिपूर्ति प्रभावित है। वर्तमान सत्र में कई जगह निजी स्कूलों ने दाखिले करने से ही मना कर दिया था। इसको लेकर मामला न्यायालय तक जा चुका है। इसी क्रम में अनुपूरक बजट में किए गए इस अतिरिक्त धनराशि के प्रस्ताव से बच्चों की पढ़ाई बिना बाधा होने की उम्मीद जगी है।

उधर, माध्यमिक शिक्षा में वर्ष 2018–19, 2019–20 व 2020–21 की उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन व कक्ष निरीक्षकों के लंबित पारिश्रमिक के भुगतान के लिए पांच करोड़ रुपये अतिरिक्त धनराशि का प्राविधान भी अनुपूरक बजट में किया गया है। यूपी बोर्ड परीक्षा के इस लंबित भुगतान की मांग भी लंबे समय से हो रही थी।

यूपी बोर्ड: परीक्षा निगरानी के लिए 50 करोड़

अनुपूरक बजट में यूपी बोर्ड परीक्षाओं की निगरानी के लिए 50 करोड़ रुपये अतिरिक्त धनराशि का प्रस्ताव किया गया है। इस धनराशि का प्रयोग परीक्षाओं में प्रश्नपत्रों की जीपीएस ट्रैकिंग व परीक्षा केंद्रों पर प्रश्नपत्रों की सर्विलांस द्वारा निगरानी के लिए होगा। साथ ही इससे नकलविहीन परीक्षा कराने के लिए परीक्षा केंद्रों में सीसीटीवी के माध्यम से निगरानी की व्यवस्था में भी मदद मिलेगी।

तीन नए डायट व सुविधाएं बढ़ाने के लिए दस करोड़ रुपये अतिरिक्त

बजट में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों (डायट) के सुदृढ़ीकरण के लिए 4,50,87000 रुपये की अतिरिक्त राशि प्राविधान किया गया है। इसमें केंद्रांश की धनराशि 270.52 लाख रुपये और राज्यांश की 180.35 लाख रुपये धनराशि है। वहीं गाजियाबाद, अमेठी व कासगंज में नए डायट की स्थापना के लिए 5,72,93000 रुपये की अतिरिक्त राशि का प्राविधान किया गया है। इसमें केंद्रांश की धनराशि 343.76 लाख और राज्य की धनराशि 229.17 लाख रुपये है।

लघु सिंचाई में 23 करोड़ मंजूर

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत 23.80 करोड़ रुपये की स्वीकृति दी गई। इस योजना में 70 प्रतिशत तक अनुदान पर किसानों को नलकूप लगाने के लिए अनुदान दिया जाता है। इस योजना में यह अतिरिक्त रकम स्वीकृत की गई।

किसानों का ;ण माफ करने के लिए 190 करोड़ का अतिरिक्त बजट

फसल ऋण मोचन योजना के तहत लघु एवं सीमांत किसानों को फसल ऋण के लिए भुगतान करने को 190.27 करोड़ रुपये के अतिरिक्त बजट को स्वीकृति दी गई। इस योजना के तहत सरकार राज्य के छोटे और सीमांत किसानों के लिए 1 लाख रुपये तक के कृषि ऋण माफ कर रही है। इसके अलावा लखनऊ मंडल विकास निगम पर राष्ट्रीय केमिकल एवं फर्टीलाइजर्स कंपनियों की देनदारी के लिए 14.77 लाख रुपये को स्वीकृति दी गई।

सहकारी चीनी मिलों के लिए 50 करोड

प्रदेश की सहकारी चीनी मिलों के लिए 50 करोड़ के अतिरिक्त बजट को स्वीकृति दी गई। इन मिलों की क्षमता विस्तारीकरण, प्रदूषण नियंत्रण एवं को जेनरेशन प्लांट आसवनी की स्थापना के लिए 20 करोड़ का बजट स्वीकृत किया गया है। इसके अलावा रुग्ण यानी खराब हालत से गुजर रही सहकारी चीनी मिलों के कर्मचारियों, सेवानिवृत्त कर्मचारियों के अवशेष भुगतान के लिए 30 करोड़ का अतिरिक्त बजट स्वीकार किया गया।

मतांतरण : भूसांस्कृतिक निष्ठा बदल

अवैध मतांतरण राष्ट्रीय चुनौती है। ईसाई इस्लामी समूह काफी लम्बे समय से अवैध मतांतरण में संलग्न हैं। वे सारी दुनिया को अपने पंथ मजहब में मतांतरित करने के लिए तमाम अवैध साधनों का इस्तमाल कर रहे हैं। अपनी आस्था विवेक और अनुभूति में जीना प्रत्येक मनुष्य का अधिकार है। लेकिन यहाँ अवैध मतांतरण के लिए छल बल भय और प्रलोभन सहित अनेक नाजायज तरीके अपनाए जा रहे हैं। यह मानवता के विरुद्ध असाधारण अपराध है। और राष्ट्रीय अस्मिता के विरुद्ध युद्ध भी है। मतांतरण से व्यक्ति अपना मूल धर्म ही नहीं छोड़ता, उसकी देव आस्थाएं बदल जाती हैं। पूर्वज बदल जाते हैं। वह अपनी संस्कृति के प्रति स्वाभिमानी नहीं रह जाता। वह नए पंथ मजहब के प्रभाव में अपने पूर्वजों पर भी गर्व नहीं करता। उसकी भूसांस्कृतिक निष्ठा बदल जाती है। भूसांस्कृतिक निष्ठा ही भारतीय राष्ट्र का मूल तत्व है। इसलिए मतांतरण राष्ट्रांतरण भी है। इस्लाम और ईसाईयत की आस्था सारी दुनिया को इस्लामी ईसाई बनाना है। ईसाई मिशनरियां अस्पताल, स्कूल जैसी सेवाएं देकर गरीबों बीमारों को ठगती हैं। वे हिन्दू देवताओं का अपमान सिखाती हैं। गांधी जी ने हरिजन (18–07–1936) में लिखा था, ''आप पुरस्कार के रूप में चाहते हैं कि आपके मरीज ईसाई बन जाएं''। 1937 में फिर लिखा, ''मिशनरी सामाजिक कार्य को निष्काम भाव से नहीं करते''। स्कूल अस्पताल बहाना हैं। मकसद मतांतरण है। इसी तरह तमाम इस्लामी संगठन भी अवैध मतांतरण में संलग्न हैं। दोनों की क्रूर कारगुजारियों का लम्बा इतिहास है।

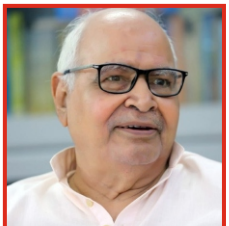
हृदय नारायण दीक्षित

औद्योगिक समूह वस्तुओं के अपने ब्रांड का प्रचार करते हैं। अपने ब्रांड को उपयोगी बताते हैं। लेकिन धर्म, पंथ, मजहब उपभोक्ता सामग्री नहीं होते। इसी तरह पंथिक समूह राजनैतिक दल भी नहीं होते। राजनैतिक समूह अपने दल को लोक कल्याणकारी बताते हैं और दुसरे दलों को भ्रष्ट। यही काम पंथ, मजहब के प्रचारक करते हैं। वे अपने पंथ को सही और दूसरे पंथ को गलत बताते हैं। जमायत – ए – इस्लाम के संस्थापक मौलाना मौदूदी ने बताया था कि सारी दुनिया में दो पार्टियां हैं – एक हज्बे अल्लाह – अल्लाह की पार्टी। एक हज्ब उल शैतान – शैतान की पार्टी। तो सभी गैर इस्लामी मत पंथ शैतान की पार्टी हैं।

भूसांस्कृतिक निष्ठा ही भारतीय राष्ट्र का मूल तत्व है। इसलिए मतांतरण राष्ट्रांतरण भी है।

मतांतरण में जुटी शक्तियां भारतीय संविधान के अनुच्छेद 25 की आड़ में कथित पंथ प्रचार करती हैं। संविधान के उक्त प्रावधान में कहा गया है, ''लोक व्यवस्था सदाचार और स्वास्थ्य तथा इस भाग के अन्य उपबंधों के अधीन सभी व्यक्तियों को अंतःकरण की स्वतंत्रता और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण करने और प्रचार करने का सामान हक होगा।'' इसे धर्म की स्वतंत्रता और प्रचार का अधिकार कहा गया है। यहाँ अंतर्विरोध हैं। 'अंतःकरण की स्वतंत्रता' में धर्म प्रचार बाधक है। मतांतरण के नतीजे घातक रहे हैं। इसके मकसद खतरनाक हैं। वी० एस० नायपाल ने 'बियांड बिलीफ' (पृष्ठ 67) में लिखा है, ''कोई भी ऐसा व्यक्ति जो अरब न होते हुए मुसलमान है, वह धर्मांतरित है। इस्लाम केवल विवेक या आस्था का विषय नहीं है। उसकी मांगें साम्राज्यवादी हैं। यह समाजों के लिए बड़ी अशांति का कारण बनता है।"

संविधान सभा में अनुच्छेद 25 पर काफी बहस हुई थी। संविधान के मूल पाठ में धर्म की जगह रिलीजन शब्द प्रयोग हुआ है। रिलीजन और धर्म में मौलिक अंतर है। धर्म भारत के लोगों की जीवनशैली है। संविधान सभा का बहुमत धर्म प्रचार के अधिकार के विरुद्ध था। सभा में तजम्मुल हुसैन ने कहा था, ''मैं आपसे मेरे अपने तरीके से मुक्ति पाने का आग्रह क्यों करूँ? आप भी मुझसे ऐसा क्यों कहें?'' सही बात है। जीवन का लक्ष्य या मुक्ति के उपाय और साधन एक पंथिक समूह द्वारा दूसरे पंथिक समूह पर नहीं थोपे जा सकते। ऐसे प्रयास सभ्य समाज पर कलंक हैं। प्रो० के० टी० शाह ने कहा कि "यह अनुचित प्रभाव डालना हुआ। ऐसे बहुत उदाहरण है जहां अनुचित धर्म परिवर्तन कराए गए हैं।" लोकनाथ मिश्र ने पंथ प्रचार के अधिकार को गुलामी का दस्तावेज बताया था। उन्होंने भारत विभाजन को मतांतरण का परिणाम बताया।

मतांतरण से जनसँख्या के चरित्र में बदलाव आते हैं। के० संथानम ने ईसाई मिशनरियों द्वारा कराए जा रहे मतांतरण पर जनता की शिकायतें बताई थीं। कहा था कि "राज्य को अनुचित प्रभाव डाल कर मतांतरण करने वालों पर कार्रवाई का पूरा अधिकार है।" संविधान सभा का बहुमत पंथ प्रचार के वैधानिक अधिकार के विरुद्ध था। इसे देख कर के० एम० मुंशी ने कहा, ''ईसाई समुदाय ने इस शब्द के रखने पर बहुत जोर दिया है। परिणाम कुछ भी हों, हमने जो समझौते

किए हैं, हमें उन्हें मानना चाहिए।'' इस प्राविधान पर दिसंबर 1948 में संविधान सभा में बहस हुई थी। 73 साल हो गए। देश स्वाधीनता का अमृत महोत्सव मना रहा है। संविधान सभा में मुंशी ने जिन समझौतों का उल्लेख किया था। आखिरकार उन समझौतों के पक्षकार कौन लोग थे? क्या तत्कालीन सरकार एक पक्षकार थी? तो दूसरा पक्ष कौन था? क्या दूसरा पक्ष संप्रभु राष्ट्र राज्य से ज्यादा प्रभावी था? अब समय आ गया है कि इस रहस्य से पर्दा उठना चाहिए। संविधान के अनु० 25 पर भी नए सिरे से विचार की आवश्यकता है। इससे राष्ट्रीय क्षति हुई है। पंथ प्रचार के अधिकार से हुए लाभ हानि पर भी विचार करने का यही सही अवसर है। पंथ प्रचार के नाम पर पंथिक मजहबी अलगाववाद बढ़ाने की इजाजत किसी को नहीं दी जा सकती।

मध्य प्रदेश में ईसाई धर्मांतरणों की बाढ़ से पीड़ित तत्कालीन मुख्यमंत्री रवि शंकर शुक्ल ने न्यायमूर्ति भवानी शंकर की अध्यक्षता में जांच समिति बनाई थी। समिति ने मतांतरण के उद्देश्य से भारत आए विदेशी तत्वों को बाहर करने की सिफारिश की थी। न्यायमूर्ति एम० वी० रेगे जांच समिति (1982) ने ईसाई मतांतरणों को दंगों का कारण बताया था। वेणु गोपाल आयोग ने मतांतरण रोकने के लिए कानून बनाने की सिफारिश की थी। मतांतरण का प्रश्न पहली लोकसभा में ही उठा था। देश के 12 राज्यों ने मतांतरण रोकने पर कानून बनाए हैं। वे राज्य उत्तर प्रदेश, उत्तरखंड, झारखण्ड, हिमांचल प्रदेश, गुजरात, अरुणाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, कर्नाटक, हरियाणा व तमिलनाडु हैं। हाल ही में सर्वोच्च न्यायपीठ में इन कानूनों के विरुद्ध याचिका भी दाखिल हुई है। याचिका में मतांतरण विरोधी कानूनों को समाप्त करने की मांग की गई है। कानून विधि सम्मत हैं। संविधान (अनु० 25 – 2) का पुनर्पाठ आवश्यक है कि, ''इस अनुच्छेद की कोई बात विद्यमान विधि के प्रवर्तन पर कोई प्रभाव नहीं डालेगी और धार्मिक आचरण से संबद्ध किसी आर्थिक, वित्तीय, राजनैतिक या अन्य क्रियाकलापों का विनियमन या निर्बंद्धन करने वाली विधि बनाने से राज्य को नहीं रोकेगी।'' राज्य विधान सभाओं ने अपनी विधायी क्षमता के आधार पर ही मतांतरण विरोधी कानून बनाए हैं। ये कानून भय, लोभ, छल से होने वाले अवैध मतांतरण रोकने के लिए ही बनाए गए हैं। वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप इन्हें प्रभावी रूप से लागू किए जाने की आवश्यकता है। विवेकानंद से गाँधी तक संविधान सभा से संसद तक मतांतरण की निंदा होती रही है। देश भय, लोभ, छल, बल आधारित मतांतरण की क्षति बर्दाश्त नहीं कर सकता। समय की मांग है कि मतांतरण का अपराध बंद होना चाहिए।

सुशासन की अटल अवधारणा

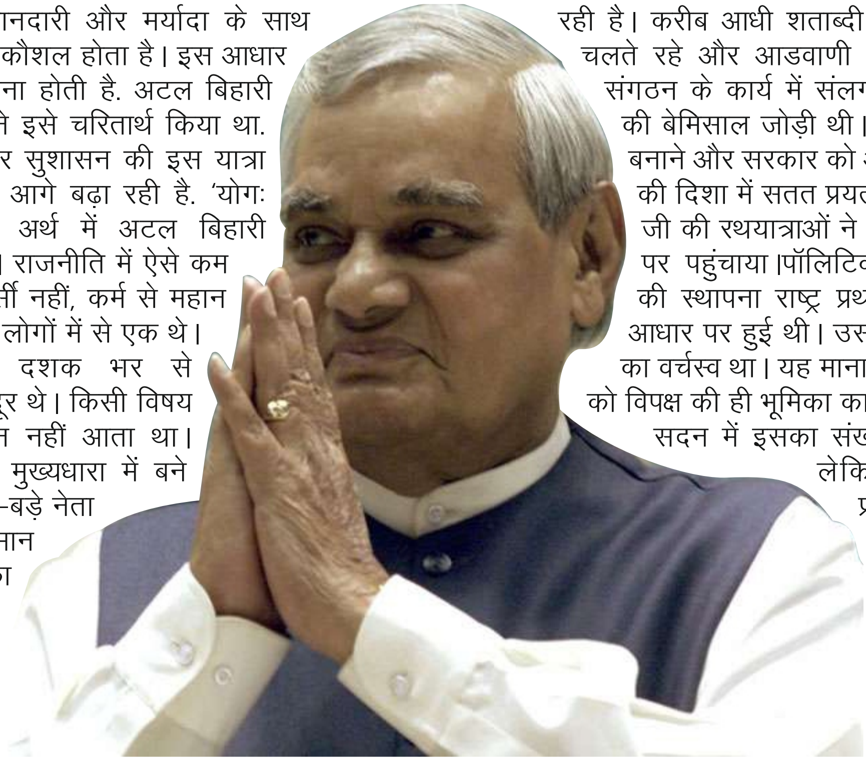

पूर्ण क्षमता, निष्ठा ईमानदारी और मर्यादा के साथ दायित्व निर्वाह ही कर्म कौशल होता है। इस आधार पर सुशासन की स्थापना होती है. अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने इसे चरितार्थ किया था. नरेन्द्र मोदी की सरकार सुशासन की इस यात्रा को शानदार तरीके से आगे बढ़ा रही है. 'योगः कर्मसु कौशलम' इस अर्थ में अटल बिहारी वाजपेयी कर्म योगी थे। राजनीति में ऐसे कम लोग ही हुए हैं जो कुर्सी नहीं, कर्म से महान बने। अटल जी ऐसे ही लोगों में से एक थे। अटल जी लगभग दशक भर से सार्वजनिक जीवन से दूर थे। किसी विषय पर उनका कोई बयान नहीं आता था। इसके बावजूद उनका मुख्यधारा में बने रहना अद्भुत था। बड़े–बड़े नेता उनके घर जाकर सम्मान की औपचारिकता का निर्वाह करते थे।

भारतीय जनसंघ की स्थापना राष्ट्र प्रथम की विचारधारा के आधार पर हुई थी। उस समय देश में कांग्रेस का वर्चस्व था। यह माना जाता था कि जनसंघ को विपक्ष की ही भूमिका का निर्वाह करना है। तब सदन में इसका संख्याबल कम होता था, लेकिन वैचारिक ओज प्रबल था। भारी बहुमत की सरकारें भी नाम मात्र के संख्याबल के विचारों से परेशान होती थीं।–1 अटल बिहारी वाजपेयी जब संसद में बोलते थे, तब लोग ध्यान से सुनते थे। सरकार को भी कई मसलों को सुधारने संभालने की प्रेरणा मिलती थी। 1980 में भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई और इसका प्रथम अधिवेशन मुम्बई में आयोजित किया गया। इस अधिवेशन में पार्टी के अध्यक्ष के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी का भाषण ऐतिहासिक था। इसमें उन्होंने जो भविष्यवाणी की थी, वो आज सत्य सिद्ध हो चुकी है। उन्होंने कहा था– 'भारत के पश्चिमी घाट को मंडित करने वाले महासागर के किनारे खड़े होकर मैं ये भविष्यवाणी करने का साहस करता हूं कि अंधेरा छंटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा।'

डॉ. दिलीप अग्निहोत्री

फिर वह समय आया जब अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में सरकार का गठन हुआ।

छह वर्षों तक इस सरकार ने देश की बेहतरीन सेवा की। अटल जी ने कहा था कि मैं तीन सौ कमल देख रहा हूँ। यह सपना भी साकार हुआ। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में लगातार दूसरी बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनी।

जनसंघ और भाजपा की यात्रा में अटल–आडवाणी की जोड़ी का योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है। उनकी राजनीति भी बेमिसाल रही है। करीब आधी शताब्दी तक अटल जी आगे चलते रहे और आडवाणी स्वेच्छा से पीछे रहे। संगठन के कार्य में संलग्न रहे। यह राजनीति की बेमिसाल जोड़ी थी। वह पार्टी को मजबूत बनाने और सरकार को अपेक्षित सहयोग करने की दिशा में सतत प्रयत्नशील रहे। आडवाणी जी की रथयात्राओं ने भाजपा को नए मुकाम पर पहुंचाया।पॉलिटिकल भारतीय जनसंघ की स्थापना राष्ट्र प्रथम की विचारधारा के आधार पर हुई थी। उस समय देश में कांग्रेस का वर्चस्व था। यह माना जाता था कि जनसंघ को विपक्ष की ही भूमिका का निर्वाह करना है। तब सदन में इसका संख्याबल कम होता था, लेकिन वैचारिक ओज प्रबल था।भारी बहुमत की सरकारें भी नाम मात्र के संख्याबल के विचारों से परेशान होती थीं। अटल बिहारी वाजपेयी जब संसद में बोलते थे, तब लोग ध्यान से सुनते थे। सरकार को भी कई मसलों को सुधारने–संभालने की प्रेरणा मिलती थी।

वस्तुतः भाजपा की यात्रा एक विचार की यात्रा रही है, जिसके आधार पर भाजपा का 'पार्टी विद अ डिफरेंस' का दावा एकदम सही लगता है। आज यह देश का सबसे लोकप्रिय दल है और इसकी विचारधारा जन–जन तक पहुँच चुकी है।

भाजपा वर्तमान राजनीति में संभवतः एक मात्र पार्टी है जो व्यक्ति या परिवार पर आधारित नहीं है। यह पूरी तरह विचारधारा पर आधारित पार्टी है। इस विचारधारा के आधार पर ही ऐसे अनेक मसलों का समाधान हुआ है, जिसकी कल्पना करना भी असंभव था।

लगभग पांच सौ वर्षों के बाद आज अयोध्या में राममंदिर निर्माण का सपना साकार हो रहा है। भूमि पूजन के बाद मंदिर निर्माण कार्य प्रारंभ हो गया है। तीन तलाक, अनुच्छेद 370 जैसे मुद्दों को छूने का साहस कोई सरकार नहीं दिखा पाई थी। नरेंद्र मोदी ने इच्छाशक्ति दिखाई। तीन तलाक पर प्रतिबंध लगा, अनुच्छेद 370 समाप्त किया गया।

इसी प्रकार नागरिकता संशोधन कानून भी लागू किया गया, जिससे पाकिस्तान, बांग्लादेश अफगानिस्तान के उत्पीड़ित बन्धुओं को नागरिकता मिलने का रास्ता साफ हुआ। इसके अलावा दीनदयाल उपाध्याय के अन्त्योदय पर आधारित गरीब–कल्याण की योजनाओं के द्वारा करोड़ों गरीब लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने का काम भी हुआ है। भाजपा की सरकारें सुशासन के प्रति समर्पित रहती हैं क्योंकि यही उनकी

विचारधारा है। भाजपा इसी विचारधारा पर आधारित पार्टी है। दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद को साकार करने का काम भाजपा ने ही किया। उसकी सरकारें अनवरत इस दिशा में प्रयास कर रही हैं। भाजपा समाज के आखिरी छोर पर खड़े व्यक्ति के विकास की बात करती है। उनको मुख्यधारा में शामिल करने का प्रयास करती है। इसके लिए अनेक योजनाओं का क्रियान्वयन सुनिश्चित किया गया है।

कांग्रेस के लोग जब रिवोल्यूएशन की बात करते थे, भाजपा इवेल्यूएशन की बात करती थी। वामपंथी पेट की भूख को बड़ा बताते हैं। वह मानते हैं कि भूख मिटने से संतुष्टि मिलती है लेकिन जहां शरीर, मन, बुद्धि एकात्म के साथ आगे बढ़ते हैं, वहीं सम्पूर्ण संतुष्टि मिलती है। यही एकात्म मानववाद है।नरेंद्र मोदी सरकार ने चालीस करोड़ लोगों के जनधन खाते खुलवाए। पहले ये लोग बैंकिंग सेवा से वंचित थे। आयुष्मान, उज्ज्वला और निर्धन आवास योजनाएं संचालित की गई। देश खुले में शौच से मुक्त हो गया। भाजपा सरकार ने घर घर बिजली पहुंचाई। आठ करोड़ गैस कनेक्शन दिए।

राजीव गांधी ने प्रधानमंत्री रहते हुए कहा था कि योजनाओं के एक रुपये में पन्द्रह पैसा गरीबों तक पहुंचता था। लेकिन वे बस कहकर ही रह गए, समाधान की दिशा में कुछ नहीं किया। समाधान नरेंद्र मोदी ने किया है। आज पूरा पैसा सीधे लोगों के खातों में पहुंच रहा है।

संगठन संरचना की दृष्टि से भी भाजपा अलग दिखाई देती है। उसका विरोध करने वाली पार्टियां परिवार आधारित थीं। वामपंथी अवश्य परिवार आधारित नहीं थे। लेकिन जनभावना को समझने और भारतीयता की दृष्टि को अपनाने में नाकाम रहे। इसलिए इनकी प्रासंगिकता समाप्त होती जा रही है।

चार दशक की इस यात्रा में आज भाजपा भारतीय राजनीति के जिस शीर्ष पर पहुंची है, वो उसकी विचारधारा के प्रति एकनिष्ठ और समर्पित भाव से बढ़ते रहने के कारण ही संभव हुआ है। वस्तुतः भाजपा की यह यात्रा एक विचार की विजय यात्रा है।

अटल बिहारी वाजपेयी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। उन्होंने कविता लिखना शुरू किया तो अच्छे कवि बन गए, डीएवी कानपुर में जब वह विद्यार्थी थे, उसी समय गोपाल दास नीरज के साथ कवि सम्मेलनों काव्य पाठ के लिए जाते थे। पत्रकारिता में आये तो मिसाल कायम कर दी। भाषण देना शुरू किया तो एक अलग शैली का निर्माण कर दिया। विरोधी भी उनके भाषण के मुरीद हुआ करते थे। राजनीति में आये तो विलक्षण स्थान बना लिया। अधिकांश जीवन विपक्ष में व्यतीत हुआ, विरोध ऐसा की कम संख्या के बाद भी सत्ता पक्ष परेशान हो जाता था, सत्ता में रहे तो ईमानदारी और निष्ठा से कार्य किया। इन परिवेश में रहते हुए भी अजातशत्रु बने रहे।

उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर लखनऊ में अटल, अचल, अविचल–शब्द, वाणी और स्वर की त्रिवेणी कार्यक्रम आयोजित किया गया। डेढ़ घण्टे के इस कार्यक्रम में उनके जीवन के सभी पहलुओं को समेटने का प्रयास किया गया। उनकी कविताओं की संगीतमय प्रस्तुति की गई।

अटल जी की प्रतिभा समाज जीवन में ही जीवंत हुई। उनका जीवन समाज के लिए ही था। इसके पीछे उनकी सुदीर्घ समाज और विचार साधना थी। पूर्ण क्षमता, निष्ठा, ईमानदारी और मर्यादा के साथ दायित्व निर्वाह ही कर्म कौशल होता है। वह जीवन के अंतिम लगभग दशक तक सार्वजनिक जीवन से दूर रहे। ऐसी स्थिति में अनेक राजनेता परिदृश्य से ओझल हो जाते है। लेकिन अटल जी के विचारों की प्रासंगिकता सदैव बनी रही। अटल, अचल,अविचल–शब्द, वाणी और स्वर बेमिसाल थे. अटल जी की प्रतिभा समाज जीवन में ही जीवंत हुई। उनका जीवन समाज के लिए ही था। इसके पीछे उनकी सुदीर्घ समाज और विचार साधना थी। पूर्ण क्षमता, निष्ठा, ईमानदारी और मर्यादा के साथ दायित्व निर्वाह ही कर्म कौशल होता है।

अटल जी किसी पद के कारण महत्वपूर्ण नहीं थे। वैसे भी छह दशक के सार्वजनिक जीवन में वह मात्र आठ वर्ष ही सत्ता में रहे, इसमें तेरह दिन, तेरह महीने और फिर पांच वर्ष प्रधानमंत्री रहे। शेष राजनीतिक जीवन विपक्ष में ही बीता। लेकिन विपक्ष और सत्ता दोनों क्षेत्रों में उन्होंने उच्च कोटि की मर्यादा का पालन किया। अटल जी का राजनीति में पदार्पण विपरीत परिस्थितियों में हुआ था। सम्पूर्ण देश में कांग्रेस का वर्चस्व था। संसद से लेकर विभिन्न विधानसभाओं में उसका भारी संख्याबल होता था। इसके अलावा आजादी के आंदोलन से निकले वरिष्ठ नेता कांग्रेस में थे। ऐसे में जनसंघ जैसी नई पार्टी और युवा अटल के लिए रास्ता आसान नहीं था। राजनीति जीवन का यह उनका पहला दायित्व था। जनसंघ के विचार अभियान में मुख्य धारा में पहचान बनाना चुनौती पूर्ण था। अटल जी मे विलक्षण भाषण क्षमता थी। इसे उन्होंने राष्ट्रवादी विचारधारा से मजबूत बनाया। उन्नीस सौ सत्तावन में वह लोकसभा पहुंचे थे। सत्ता के संख्याबल के सामने जनसंघ कहीं टिकने की स्थिति में नहीं था। अटल जी ने यह चुनौती स्वीकार की। कमजोर संख्या बल के बाबजूद अटल जी ने जनसंघ को वैचारिक रूप से महत्वपूर्ण बना दिया। यहीं से राजनीति का अटल युग प्रारंभ हुआ।

विपक्ष की राजनीति को नई धार मिली। अटल जी विपक्ष में रहे, लेकिन किसी के प्रति निजी कुंठा नहीं रहती थी। पाकिस्तान के आक्रमण के समय उन्होंने विरोध को अलग रख दिया। सरकार को अपना पूरा समर्थन दिया। राजनीत की जगह उन्होंने राष्ट्र को महत्व दिया। आज विपक्ष सर्जिकल स्ट्राइक पर सवाल

उठाता है। अटल जी सत्ता में आये तो लोककल्याण के उच्च मापदंड स्थापित कर दिए। विदेश मंत्री बने तो भारत का विश्व में गौरव बढा दिया। संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी गुंजाने वाले पहले नेता बन गए। यह अटल जी का शासन था, जिसमें लगातार इतने वर्षों तक विकास दर सर्वाधिक बनी रही। अटल जी तीन बार देश के प्रधानमंत्री रहे। अटल जी सबसे पहले उन्नीस सौ छियानबे में तेरह दिन के लिए प्रधानमंत्री बने और बहुमत साबित नहीं कर पाने के कारण उन्हें इस्तीफा देना पड़ा। उन्नीस सौ अट्ठानबे में वह दूसरी बार प्रधानमंत्री बने। यह सरकार तेरह महीने ही चली क्योंकि सहयोगी दलों ने उनसे समर्थन वापस ले लिया था।

उन्नीस सौ निन्यानबे में वह तीसरी बार प्रधानमंत्री बने थे। इस बार उन्होंने अपना कार्यकाल पूरा किया। इतना ही नहीं उपलब्धियों का रिकार्ड बनाया। पोखरण में परमाणु परीक्षण का निर्णय अटल जी ने किया था। इस परीक्षण के बाद दुनिया के शक्तिशाली देशों ने भारत पर आर्थिक प्रतिबंध भी लगाए। अटल ने प्रतिबन्धों का डट कर मुकाबला किया। फिर ऐसा समय आया जब प्रतिबंध लगाने वाले देश भारत से संबन्ध सामान्य करने को आतुर हो गए। अटल जी विश्व के भी महान नेता बन गए। वह जब विदेश मंत्री थे, तब दुनिया सोवियत संघ और अमेरिकी खेमे में विभक्त थी। अटल जी ने दोनों के बीच संतुलन स्थापित किया। जब वह प्रधानमंत्री बने तो विश्व की राजनीति बदल चुकी थी। सोवियत संघ का विघटन हो गया था। अटल जी ने इसमें भी भारत के अलग प्रभाव को बुलंद किया। पाकिस्तान से संबन्ध सुधारने के लिए बस यात्रा की। यह उनका उदार चिंतन था। लेकिन पाकिस्तान नहीं बदला। यह उंसकी फितरत थी।

देश के बड़े शहरों को सड़क मार्ग से जोड़ने की शुरूआत भी अटल जी के शासनकाल के दौरान हुई। पांच हजार किमी. से ज्यादा की स्वर्णिम चतुर्भुज योजना को तब विश्व के सबसे लंबे राजमार्गों वाली परियोजना माना गया था। दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई व मुम्बई को राजमार्ग से जोड़ा गया।

अटल जी ने गांवों को सड़क से जोड़ने का काम शुरू किया था। उन्हीं के शासनकाल के दौरान प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना की शुरूआत हुई थी। इसी योजना से लाखों गांव सड़कों से जुड़े। इस योजना का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण इलाकों में पांच सौ या इससे अधिक आबादी वाले पहाड़ी और रेगिस्तानी क्षेत्रों में ढाई सौ लोगों की आबादी वाले सड़क–संपर्क से वंचित गांवों को मुख्य सड़कों से जोड़ना था। अटल जी के शासनकाल में ही भारत में टेलीकॉम क्रांति की शुरूआत हुई। टेलीकॉम से संबंधित कोर्ट के मामलों को तेजी से निपटाया गया और ट्राई की सिफारिशें लागू की गईं। स्पैक्ट्रम का आवंटन इतनी तेजी से हुआ कि मोबाइल के क्षेत्र में क्रांति की शुरूआत हुई। पाकिस्तानी घुसपैठियों ने कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ कर भारत के बड़े क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था। भारतीय सेना और वायुसेना ने पाकिस्तान के कब्ज़े वाली जगहों पर हमला किया। एक बार फिर पाकिस्तान को भागना पड़ा था।

अटल जी अब हमारे बीच नहीं है। लेकिन अटल युग आज भी प्रासंगिक है। इससे पक्ष और विपक्ष दोनों को प्रेरणा लेनी चाहिए। अटल बिहारी वाजपेयी ने सदैव राजनीति के उच्च आदर्शों पर अमल किया। वह राष्ट्रहित की विचारधारा के प्रति समर्पित रहे। विपक्ष में रहे तो इसी आधार पर सरकार का विरोध किया। इसमें कोई व्यक्तिगत दुराव नहीं था। इसलिए उन्हें अजातशत्रु कहा गया। वह किसी पद के कारण महत्वपूर्ण नहीं थे। सात दशक के सार्वजनिक जीवन में वह मात्र आठ वर्ष ही सत्ता में रहे, इसमें 13 दिन, 13 महीने और फिर पांच वर्ष प्रधानमंत्री रहे। शेष राजनीतिक जीवन विपक्ष में ही बीता। लेकिन विपक्ष और सत्ता दोनों क्षेत्रों में उन्होंने उच्च कोटि की मर्यादा का पालन किया। अटल बिहारी वाजपेयी ने सदैव राजनीति के उच्च आदर्शों पर अमल किया। वह राष्ट्रहित की विचारधारा के प्रति समर्पित रहे। विपक्ष में रहे तो इसी आधार पर सरकार का विरोध किया। इसमें कोई व्यक्तिगत दुराव नहीं था। इसलिए उन्हें अजातशत्रु कहा गया। आजादी के बाद संपूर्ण देश में कांग्रेस का वर्चस्व था। संसद से लेकर विभिन्न विधानसभाओं में उसका भारी संख्या बल होता था। आजादी के आंदोलन से निकले वरिष्ठ नेता कांग्रेस में थे। ऐसे में जनसंघ जैसी नई पार्टी और युवा अटल के लिए रास्ता आसान नहीं था। राजनीतिक जीवन का यह उनका पहला दायित्व था। जनसंघ के विचार अभियान में मुख्यधारा में पहचान बनाना चुनौती पूर्ण था। अटल जी में विलक्षण भाषण क्षमता थी। इसे उन्होंने राष्ट्रवादी विचारधारा से मजबूत बनाया।1957 में अटल जी लोकसभा पहुंचे। सत्ता के संख्या बल के सामने जनसंघ कहीं टिकने की स्थिति में नहीं था। अटल जी ने इस चुनौती को स्वीकार किया। कमजोर संख्या बल के बावजूद अटल जी ने जनसंघ को वैचारिक रूप से महत्वपूर्ण बना दिया। यहीं से राजनीति का अटल युग प्रारंभ हुआ। विपक्ष की राजनीति को नई धार मिली। अटल बिहारी विपक्ष में रहे। तब उनके भाषण सत्ता को परेशान करने वाले थे। लेकिन किसी के प्रति निजी कुंठा नहीं रहती थी। पाकिस्तान के आक्रमण के समय उन्होंने विरोध को अलग रख दिया। सरकार को अपना पूरा समर्थन दिया। राजनीति की जगह उन्होंने राष्ट्र को महत्व दिया। आज विपक्ष सर्जिकल स्ट्राइक पर सवाल उठाता है।

अटल जी सत्ता में आये तो लोक कल्याण के उच्च मापदंड

स्थापित कर दिए। विदेश मंत्री बने तो भारत का विश्व में गौरव बढा दिया। संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी गुंजाने वाले पहले नेता बन गए। यह अटल जी का शासन था, जिसमें लगातार इतने वर्षों तक विकास दर सर्वाधिक बनी रही। उनके शासनकाल में ही भारत में टेलीकॉम क्रांति की शुरूआत हुई। टेलीकॉम से संबंधित कोर्ट के मामलों को तेजी से निपटाया गया और ट्राई की सिफारिशें लागू की गईं। स्पैक्ट्रम का आवंटन इतनी तेजी से हुआ कि मोबाइल के क्षेत्र में क्रांति की शुरूआत हुई।

पाकिस्तानी घुसपैठियों ने कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ कर भारत के बड़े क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था। भारतीय सेना और वायुसेना ने पाकिस्तान के कब्ज़े वाली जगहों पर हमला किया। एक बार फिर पाकिस्तान को भागना पड़ा था। अटल जी अब हमारे बीच नहीं है। लेकिन अटल युग आज भी प्रासंगिक है। इससे पक्ष और विपक्ष दोनों को प्रेरणा लेनी चाहिए।राजनीति और राजनीति शास्त्र दोनों अलग क्षेत्र है। राजनीति में सक्रियता या आचरण का बोध होता है, राजनीति शास्त्र में ज्ञान की जिज्ञासा होती है। अटल बिहारी वाजपेयी ने इन दोनों क्षेत्रों में समान रूप से आदर्श का पालन किया। राजनीति में आने से पहले वह राजनीति शास्त्र के विद्यार्थी थे। कानपुर के डीएवी कॉलेज में नई पीढ़ी भी उनकी यादों का अनुभव करती है। अटल जी उन नेताओं में शुमार थे, जिनके कारण किसी पद की गरिमा बढ़ती है।

डीएवी में जाने पर अनुभूति होती है कि यहीं कभी अटल जी विद्यार्थी के रूप में उपस्थित रहते थे। कालेज के प्रथम तल पर कमरा नंबर इक्कीस में वह बेंच पर बैठते थे। डीएवी कानपुर में अटल जी के गुरु रहे प्रो. मदन मोहन पांडेय के निर्देशन में मुझे पीएचडी करने का सौभाग्य मिला। अक्सर बातचीत में वह अटल जी की चर्चा करते थे। इससे यह पता चला कि अटल जी बहुत होनहार विद्यार्थी थे, उनमें ज्ञान के प्रति जिज्ञासा थी। प्रो. पांडेय के निर्देशन में पीएचडी करने के बाद शिक्षक के रूप में मेरी नियुक्ति इसी विभाग में हुई। यहां प्रवेश करते ही अटल जी की तस्वीर दिखाई देती है। नीचे पूर्व प्रधानमंत्री नहीं, बल्कि पूर्व छात्र लिखा है। यहां बैठने पर ऊपर एक सूची पट्ट दिखाई देता है। उन्नीस सौ सैंतालीस पर नजर टिक जाती है। इसमें विद्यार्थी का नाम लिखा है–अटल बिहारी वाजपेयी..डिवीजन प्रथम, पोजिशन द्वितीय।

राजनीतिक जीवन में उनका दामन बेदाग रहा। सत्ता मिली तब भी सहज रहे। सत्ता उद्देश्य नहीं बल्कि दायित्व था। विपक्ष में ही सत्तर वर्ष रहे, राष्ट्र के लिए वैसा ही समर्पण रहा। तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिंहराव ने उन्हें भारत का पक्ष रखने के लिए जेनेवा भेजा था। अटल जी ने अपने इस दायित्व को बखूबी निभाया। वह अपने लिए नहीं देश और समाज के लिए जिये। उनका जीवन प्रेरणादायक है।

अटल बिहारी वाजपेयी सही अर्थो में भारत रत्न थे। इन सबसे भी बढ़कर अटल बिहारी वाजपेयी एक अच्छे इंसान थे। उन्होंने ज़मीन से जुड़े रहकर राजनीति की और जनता के प्रधानमंत्री के रूप में लोगों के दिलों में अपनी खास जगह बनाई। अटल जी एक ऐसे इंसान थे जो बच्चे, युवाओं, महिलाओं, बुजुर्गों सभी के बीच में लोकप्रिय थे। देश का हर युवा, बच्चा उन्हें अपना आदर्श मानता था।

भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी देशभक्ति व भारतीय संस्कृति की प्रखर आवाज थे। भारत की राजनीति में मूल्यों और आदर्शों को स्थापित करने वाले राजनेता और प्रधानमंत्री के रूप में उनका काम बहुत अच्छा रहा। उनके कार्यों के कारण ही उन्हें भारत के ढांचागत विकास का दूरदृष्टा कहा जाता है। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी अटल का सार्वजनिक जीवन बे–दाग और साफ़–सुथरा था। उनके विरोधी भी उनके प्रशंसक थे। उनके लिए राष्ट्रहित सदा सर्वोपरि रहा, तभी उन्हें राष्ट्र–पुरुष कहा जाता था। अपनी कविताओं के माध्यम से अटल जी हमेशा सामाजिक बुराइयों पर प्रहार करते थे।

अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसम्बर 1924 को ग्वालियर में हुआ था। आपके पिता का नाम पंडित कृष्ण बिहारी वाजपेयी और माता का नाम कृष्णा वाजपेयी था। अटल जीकी बीए की शिक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज में हुई। उसके पश्चात् कानपुर के डीएवी महाविद्यालय से कला में स्नातकोत्तर उपाधि भी प्रथम श्रेणी में प्राप्त की। अटल ने अपने जीवन में पत्रकार के रूप में भी काम किया और लम्बे समय तक राष्ट्रधर्म, पाञ्चजन्य और वीर अर्जुन आदि राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत अनेक पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। वे भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य थे और उन्होंने लम्बे समय तक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसे प्रखर राष्ट्रवादी नेताओं के साथ काम किया।

अटल 1977 से 1979 तक विदेश मंत्री रहे। विदेश मंत्री रहते हुए पूरे विश्व में भारत की छवि बनाईं और विदेश मंत्री के रूप में संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी में भाषण देने वाले देश के पहले वक्ता बने। 1998 में अटल बिहारी वाजपेयी दूसरी बार देश के प्रधानमंत्री बने और इस बीच अटल बिहारी वाजपेयी ने दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय देते हुए पोखरण में पाँच भूमिगत परमाणु परीक्षण विस्फोट कर सम्पूर्ण विश्व को भारत की शक्ति का एहसास कराया। अमेरिका और यूरोपीय संघ समेत कई देशों ने भारत पर कई तरह के प्रतिबंध लगा दिए लेकिन उसके पश्चात् भी भारत वर्ष अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में हर प्रकार की चुनौतियों से सफलता पूर्वक निबटने में सफल रहा।कारगिल युद्ध में विजय के पश्चात् हुए 1999 के लोकसभा चुनाव में भाजपा फिर अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। १३ दलों से गठबंधन करके राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के रूप में सरकार बनाकर पाँच साल का कार्यकाल पूर्ण किया। इन पाँच वर्षों में अटल जी ने देश के अन्दर प्रगति के अनेक आयाम छुए और सरकार ने गरीबों, किसानों और युवाओं के लिए अनेक योजनाएँ लागू की। वह एक राष्ट्र समर्पित राजनेता होने के साथ–साथ कुशल संगठक भी थे जिन्होंने भाजपा की नींव रख उसके विस्तार में एक अहम भूमिका निभाई और करोड़ों कार्यकर्ताओं को देश सेवा के लिए प्रेरित किया। श्रद्धेय अटल के प्रधानमंत्री कार्यकाल में देश ने पहली बार सुशासन की कल्पना को चरितार्थ होते देखा। जहां एक ओर उन्होंने सर्व शिक्षा अभियान, पीएम ग्राम सड़क योजना, राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना जैसे विकासशील कार्य किए तो वहीं दूसरी ओर पोखरण परीक्षण और करगिल विजय से विश्वपटल पर एक मज़बूत भारत की नींव रखी। आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार अटल के विचारों को केंद्र में रखकर सुशासन व गरीब कल्याण के मार्ग पर अग्रसर है और भारत को विश्व में एक महाशक्ति बनाने के लिए कटिबद्ध है। यह सुशासन की प्रेरणा से ही सम्भव हो रह।

स्वावलंबी भारत में युवाओं की भूमिका

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का 68 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन महाराणा प्रताप नगर (जे. ई. सी.आर. सी. विश्वविद्यालय, जयपुर) में हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस अधिवेशन में देश के सभी प्रांतों से कुल 1485 प्रतिनिधि कार्यकर्ता उपस्थित रहे। जिनमे 986 छात्र, 344 छात्रा कार्यकर्ता तथा 129 प्राध्यापक कार्यकर्ता एवं 4 अन्य कार्यकर्ता रहे । इसके अलावा मित्र देश नेपाल से भी 22 अतिथि प्रतिभागी सम्मिलित हुए। देश के सुदूर पूर्वोत्तर राज्यों, मणिपुर, नागालैंड तथा मिजोरम आदि से लेकर अंडमान निकोबार,जम्मू कश्मीर एवं लद्दाख से भी कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। अधिवेशन के प्रथम दिन (25 नवम्बर2022) उद्घाटन सत्र में योग गुरु स्वामी राम देव जी मुख्य अतिथि रहे। दूसरे दिन (26 नवम्बर, 2022) को जयपुर शहर में 'लघु भारत' दर्शन हुये जिसमें सभी प्रांतों से आए अभाविप के कार्यकर्ताओं के द्वारा उनकी पारंपरिक वेशभूषा में विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। जयपुर के नागरिकों ने जगह – जगह पर शोभायात्रा पर पुष्प वर्षा कर अभिनंदन किया। साथ ही प्रसिद्ध अल्बर्ट हॉल पर खुला अधिवेशन हुआ जिसमें नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. राजशरण शाही की उपस्थिति में राष्ट्रीय महामंत्री श्री याज्ञवल्क्य शुक्ल एवं अन्य छात्र नेताओं ने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। अंतिम दिन प्रतिष्ठित प्रा. यशवंत राव केलकर युवा पुरस्कार समारोह में केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान मुख्य अथिति के रूप में उपस्थित रहे। इस वर्ष यह पुरस्कार बुलढाना, महाराष्ट्र के युवा समाज सेवी श्री नन्द कुमार पालवे को दिया गया। उन्हें यह पुरस्कार निराश्रितों और मानसिक रूप से दिव्यांगो को पोषण, स्वास्थ्य एवं स्नेह देकर उनका सम्मानजनक पुनर्वास करने के उनके सराहनीय सेवा कार्य के लिए दिया गया है। पुरस्कार में प्रोत्साहन राशि के रूप में 1 लाख रुपए एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया है।

अधिवेशन में कई महत्वपूर्ण विषयों पर पदाधिकारियों ने भाषण दिए। अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री प्रफुल्ल आकांत ने 'स्वावलंबी भारत में युवाओं की भूमिका' तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह मुकुंद जी ने 'वैचारिक विमर्श स्थापित करने में अभाविप की भूमिका' विषय पर भाषण दिए। अधिवेशन के मुख्य आकर्षण में अपने गौरवशाली इतिहास का याद दिलाती हमारे पूर्वजों की मूर्तियां रही। परिसर में महाराणा प्रताप, स्वामी विवेकानंद, बलिदानी भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव तथा श्री गोविंद गुरु आदि की विशाल भव्य एवं सुंदर मूर्तियां लगाई गई थी। रानी पद्मिनी की प्रेरक प्रतिमा मिट्टी से खड़े किए गए दुर्ग पर ध्वज मंडल के समीप लगाई गई जिसकी सुंदर छवि मोहक रही। विभिन्न स्वदेशी उत्पादों के स्टॉल भी आकर्षण का केंद्र रहे। अपनी अनुशासित कार्यशैली का परिचय देते हुए, अधिवेशन के सभागार के बाहर पंक्तिबद्ध रूप से उतारे गए जूते चप्पलों का क्रम ध्यान खींचने वाला रहा।

अधिवेशन से पूर्व रानी पद्मावती महान शौर्य, साहस, समर्पण एवं बलिदान से सनी चित्तौड़गढ़ किले की मिट्टी भी एकत्र कर लाई गई है। अधिवेशन के अंत में यह मिट्टी सभी प्रांतों के कार्यकर्ता अपने–अपने प्रांतों में लेकर गये।

अधिवेशन में कार्यकर्ताओं ने हुनरबाज मंच के माध्यम से प्रतिभा प्रदर्शन कर विभिन्न प्रस्तुतियां भी दी। रंगारंग कार्यक्रमों में भारत के विभिन्न प्रांतों की मन मोहक परंपराओं का चित्रण सजीव हो उठा। अधिवेशन के अंतिम दिन परिषद की नवीन राष्ट्रीय कार्यकारिणी की भी घोषणा हुई।

अधिवेशन में शिक्षा, समाज एवं अंतरिक सुरक्षा से संबंधित पांच महत्वपूर्ण प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किए गए। जो क्रमशः इस प्रकार हैं:

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन हेतु केंद्र एवं राज्य सरकारें करें विशेष निधि का आवंटन
2. भारतीय ज्ञान परंपरा युक्त एवं भारतीय भाषा में हो शिक्षा
3. प्रवेश, परीक्षा और परिणाम में अनियमितताएं हो शीघ्र दूर
4. आंतरिक सुरक्षा हेतु कट्टरपंथी संगठन पी एफ आई का प्रतिकार आवश्यक
5. वैश्विक पटल पर भारत की भूमिका महत्वपूर्ण

अभाविप कार्यकर्ता अपने अपने प्रांतों में वापस लौटकर वर्ष भर इन पारित प्रस्तावों के क्रियान्वयन पर कार्य करेंगे साथ ही आगे आने वाले माह में अभाविप के द्वारा देश भर में स्वावलंबी भारत अभियान के निमित्त हम सभी प्रांतों में प्रांत स्तरीय स्वावलंबी भारत अभियान की समिति बनाकर परिसरों में उद्यमिता प्रोत्साहन हेतु कार्यक्रम, परिसरों में उद्यमिता सेल बनाने, अभाविप के अमृत महोत्सव के संदर्भ में परिषदीय रचना के सभी जिलों में वर्ष 2023 के जनवरी माह में जिला सम्मेलन, बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जी के महापरिनिर्वाण दिवस (6 दिसंबर) को मनाए जाने वाले सामाजिक समरसता दिवस के कार्यक्रमों की विशेष योजना तथा भारत को G 20 की अध्यक्षता मिलने के संदर्भ में परिसरों में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों एवं कार्यक्रमों का संपादन करेंगे।

अभाविप की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक दि. 26, 27, 28 मई 2023 को पुणे में तथा 2023 में अभाविप का 69 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन अक्टूबर अथवा नवंबर माह में दिल्ली में सम्पन्न होगा।

भारत को गुलामी की मानसिकता से मुक्ति चाहिए : होसबले

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह माननीय दत्तात्रेय होसबाले जी ने लखनऊ डालीबाग स्थित गन्ना संस्थान के सभागार में राष्ट्रधर्म मासिक पत्रिका के विशेषांक 'राष्ट्रीय विचार–साधना' अंक का लोकार्पण किया। इस अवसर पर सरकार्यवाह जी ने राष्ट्रधर्म की वेबसाईट का भी शुभारम्भ किया और कहा कि सभी धर्मों का राष्ट्रधर्म के साथ सन्तुलन बनाये रखना आवश्यक है। भारत को गुलामी की मानसिकता से मुक्ति चाहिए। भारत में विविधता विरोध नहीं बल्कि यहाँ का सौन्दर्य है। भारत एक राष्ट्र है, एक संस्कृति है, एक जन है। बौद्धिक गुलामी से मुक्ति के लिए राष्ट्रधर्म का प्रकाशन शुरू हुआ था। उन्होंने कहा कि 15 अगस्त 1947 को देश को राजनीतिक स्वतंत्रता तो मिल गयी लेकिन बौद्धिक स्वतंत्रता नहीं मिली। बौद्धिक गुलामी से मुक्ति के लिए ही पंडित दीनदयाल उपाध्याय और अटल बिहारी बाजपेई ने राष्ट्रधर्म का प्रकाशन शुरू किया। उन्होंने कहा कि अपने विचार को पकड़कर जिस अधिष्ठान पर राष्ट्रधर्म चला है उसको न छोड़ते हुए वैचारिक यात्रा जारी है। देश स्वाधीन होने के 15 दिन के अंदर देश की जनता के प्रबोधन के लिए राष्ट्रधर्म शुरू हुआ। राष्ट्रधर्म के पहले अंक में छपी अटल जी की कविता हिन्दू तन मन हिन्दू जीवन रग–रग हिन्दू मेरा परिचय ने राष्ट्रधर्म क्या है इसका परिचय कराया।

दत्तात्रेय होसबाले ने कहा कि 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' राष्ट्रधर्म का ध्येय वाक्य है। सारे विश्व का कल्याण होना चाहिए यह भारत की मिट्टी का स्वभाव है। यहां के लोग छोटे मन से सोचते नहीं है। ''राष्ट्रधर्म तो कल्पवृक्ष है संघशक्ति ध्रुवतारा है, भारत फिर से जगद्गुरू हो यह संकल्प हमारा है।'' राष्ट्रधर्म की इन दो पंक्तियों में राष्ट्रधर्म का उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है।

सरकार्यवाह ने कहा कि स्वाधीनता की प्रथम किरणें जब आयीं तब भारत को विश्व गुरू बनाने का संकल्प राष्ट्रधर्म ने लिया। राष्ट्रधर्म वैचारिक अधिष्ठान को लेकर चल रहा है। राष्ट्रधर्म को भूलकर हम कुछ भी नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि कार्यपालिका, न्यायपालिका, विधायिका और पत्रकारिता लोकतंत्र के इन चारों स्तम्भों में सामंजस्य होना चाहिए।

दत्तात्रेय होसबाले ने कहा कि देश की हर क्षेत्र में उन्नति और प्रगति होनी चाहिए लेकिन वैचारिक स्पष्टता और वैचारिक शुद्धता भी चाहिए। आर्य द्रविड़ मिथक को स्थापित करने का प्रयास इस देश में किया गया। भारत एक देश है ही नहीं ऐसी बातें कही गयीं। अंग्रेजों के जमाने से शुरू हुआ षड़यंत्र आजादी के 75 वर्षों तक जारी रहा। सरकार्यवाह ने बताया कि स्वतंत्रता के बाद भी भारत की संसद में बजट शाम पांच बजे पेश होता था। अटल जी जब प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने यह परम्परा बदली। राजपथ को कर्तव्यपथ बनाने का काम हुआ। देश को मानसिक गुलामी से बाहर लाना होगा।

होसबाले ने कहा कि भारत एक राष्ट्र एक जन एक संस्कृति है। विविधता यहां का सौन्दर्य है। हम सब एक हैं। विविधता के साथ हम युगों से साथ रहते आये हैं। इस एकता एकात्मता को हम सब भारत के लोगों ने पकड़कर रखा है। इसे तोड़ने के लिए अंग्रेजों ने प्रत्यन किया। हमारे इतिहास को गलत ढ़ंग से पेश किया गया। मानसिक गुलामी को तिलांजलि देनी चाहिए इस दिशा में राष्ट्रधर्म प्रयास कर रहा है। राष्ट्रधर्म का जन प्रबोधन का कार्य हमेशा आगे बढ़ता रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए न्यायमूर्ति (अवकाश प्राप्त) दिनेश कुमार त्रिवेदी ने कहा कि राष्ट्रधर्म सबसे बड़ा धर्म है। उन्होंने कहा कि देशवासियों में चेतना जगाने के लिए राष्ट्रधर्म की स्थापना की गयी थी। दिनेश कुमार त्रिवेदी ने कहा कि जो इस राष्ट्र में रहता है वह किसी धर्म को माने लेकिन राष्ट्रधर्म सबसे ऊपर है। राष्ट्र पर जब भी कोई आपदा आती है तो प्रत्येक भारतवासी उसके साथ खड़ा हो जाता है यही राष्ट्रधर्म है।

वरिष्ठ पत्रकार के. विक्रम राव ने कहा कि विचार पत्रिका तटस्थ नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि पत्रकार को पक्षपात नहीं करना चाहिए। के.विक्रम राव ने कहा कि देश में त्रिभाषा फार्मूला लागू होना चाहिए।

राष्ट्रधर्म के संपादक प्रो. ओम प्रकाश पाण्डेय ने कहा कि देश के विभाजन के बाद देश उद्वेलित था। क्रांतिकारियों की अवज्ञा की जा रही थी। ऐसे समय में राष्ट्रधर्म ने वैज्ञारिक यज्ञ शुरू करने का काम किया था।

इस अवसर पर सरकार्यवाह ने राष्ट्रधर्म के पूर्व संपादक आनन्द मिश्र अभय और वीरेश्वर द्विवेदी का सम्मान किया। इसके अलावा राष्ट्रधर्म की संपादन टोली, विज्ञापन प्रतिनिधियों और अभिकर्ताओं का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के क्षेत्र प्रचारक अनिल, अवधप्रांत के प्रांत प्रचारक कौशल, राष्ट्रधर्म के प्रभारी सर्वेश द्विवेदी, राष्ट्रधर्म के निदेशक मनोजकांत, सह क्षेत्र प्रचारक प्रमुख नरेन्द्र सिंह, परिवार प्रबोधन के क्षेत्र संयोजक ओमपाल जी, अवध प्रान्त के प्रान्त प्रचार प्रमुख डा. अशोक दुबे, विश्व संवाद केन्द्र के प्रमुख डा. उमेश, प्रान्त प्रचारक प्रमुख यशोदानन्द प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रधर्म के प्रबंधक डा. पवन पुत्र बादल ने किया।

सम्पर्क, संवाद, समन्वय, सामंजस्य एवं सामूहिकता ही विजय नीति

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश पदाधिकारियों की राज्य मुख्यालय पर संपन्न हुई। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी की अध्यक्षता एवं प्रदेश सहप्रभारी श्री सत्याकुमार व प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह जी की उपस्थिति में हुई बैठक में संगठन की आगामी कार्ययोजना के साथ ही नगर निकाय चुनाव की तैयारियों तथा आगामी कार्ययोजना पर चर्चा हुई। पार्टी ने तय किया कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार व मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में राज्य की भाजपा सरकार द्वारा लोककल्याण के लिए किये गए कार्यों और सम्पर्क, संवाद, समन्वय, सामंजस्य एवं सामूहिकता की नीति के आधार पर पार्टी निकाय चुनाव लड़ेगी। पार्टी 12 दिसम्बर से 18 दिसम्बर तक आगामी संगठनात्मक कार्यों एवं नगर निकाय चुनावों को लेकर क्षेत्र एवं जिला स्तर पर बैठकें आयोजित होगी।

प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि मोदी–योगी सरकार के कार्यों और कार्यकर्ताओं के परिश्रम से पार्टी निकाय चुनाव में ऐतिहासिक जीत दर्ज करायेगी। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव के पहले हो रहे नगरीय निकाय का चुनाव महत्वपूर्ण हैं। हम सभी पार्टी पदाधिकारियों का यह दायित्व है कि वे संगठन की योजनानुसार कार्य करते हुए नगर निकाय के चुनावों में पार्टी की जीत सुनिश्चित करने के अभियान में लगे। उन्होंने कहा कि पार्टी के प्रदेश से लेकर बूथ तक के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं को एकजुट होकर प्रदेश में नगरीय निकाय के चुनाव में पार्टी की जीत के लिए काम करना है। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि नगरीय निकाय चुनावों के लिए जल्द ही अधिसूचना जारी होने की संभावना है ऐसे में हम सब लोग संगठन की तय योजनानुसार

शेष अगले पृष्ठ पर

केजी मारार: केरल के सामाजिक-राजनीतिक जगत के एक महान नेता

श्री केजी मारार ने केरल में डेढ़ दशक तक भाजपा का नेतृत्व किया। भाजपा, जनसंघ और रा.स्व.संघ में उनका योगदान शब्दों से कहीं अधिक है। वह अपनी बुद्धि, दृढ़ संकल्प, समर्पण, चतुराई और नजरिये के साथ साढ़े तीन दशक से अधिक समय तक केरल के सामाजिक–राजनीतिक जगत के एक महान नेता रहे। संघ के साथ उनके जुड़ाव ने उनकी राष्ट्रीय भावना को प्रज्ज्वलित किया और उन्होंने अपना जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया। उन्होंने शिक्षक के तौर पर अपनी नौकरी से त्यागपत्र देकर, सीपीएम के गढ़ कन्नूर में जनसंघ के लिए काम करने का निर्णय लिया। उन्होंने खतरों और बाधाओं का सामना करते हुए, ईट–दर–ईट लगाकर राजनीतिक नींव रखी। उन्हें जनसंघ का प्रदेश मंत्री बनाया गया। उन्होंने केरल में भाजपा स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उन्होंने पार्टी संगठन में प्रदेश महामंत्री और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सहित विभिन्न दायित्वों पर कार्य किया। उनका जीवन सिद्धांतवादी राजनीति को समर्पित रहा और उन्होंने प्रदेश में आदिवासियों एवं मछुआरा समुदाय के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। श्री मारार ने सत्ता के लिए अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। उन्हें 1975 में आपातकाल के दौरान गिरफ्तार किया गया था और 18 महीने की कैद हुई थी। जेल से रिहा होने के बाद श्री केजी मारार को जनता पार्टी ने राज्य परिषद् का सदस्य बनाया। विधानसभा और लोकसभा चुनाव लड़ना उनके राजनीतिक मिशन का ही विस्तार था। मंजेश्वरम चुनाव में उन्हें 1,000 मतों के मामूली अंतर से हार का सामना करना पड़ा। अपने अनुभव से उन्होंने इस बात की ओर इशारा किया था कि भाजपा को हराने के लिए सीपीएम और कांग्रेस हाथ मिला सकती है और यह बात सही साबित हुई। मारारजी ने यह भी भविष्यवाणी की थी कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी एक दिन भारत के प्रधानमंत्री बनेंगे, लेकिन, दुःख की बात है कि वह श्री अटल बिहारी वाजपेयी को देश के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेते हुए देखने के लिए जीवित नहीं रहे।

पिछले पृष्ठ का शेष

महापौर, पार्षद, पालिका अध्यक्ष, नगर पंचायत अध्यक्ष व अन्य पदो के लिए अपनी तैयारियां पूरी कर लें। उन्होंने जिला व वार्ड स्तर पर चुनाव समितियों के गठन पर भी जोर दिया। श्री चौधरी ने कहा कि नगर निकाय चुनाव में एक–एक कार्यकर्ता को जिम्मेदारी सौंपकर चुनावी रणनीति तैयार की जाए। हर बूथ भाजपा–हर घर भाजपा के मंत्र के साथ प्रत्येक दहलीज तक सम्पर्क करना है। उन्होंने कहा कि चुनाव में ज्यादा समय नहीं है। इसलिए सभी संगठनात्मक कार्यों को शीघ्रता से पूर्ण करना हैं उन्होंने कहा कि निकाय चुनाव में भाजपा प्रत्याशी चयन की प्रक्रिया का आधार सामूहिकता होगा। महापौर, नगरपालिका अध्यक्ष, नगर पंचायत अध्यक्ष तथा नगरनिगम, नगरपालिका व नगर पंचायत के पार्षद प्रत्याशी स्क्रीनिंग कमेटी द्वारा तय किये जाएगें।

प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने बैठक में पिछले दिनों नई दिल्ली में हुई राष्ट्रीय पदाधिकारियों की बैठक में हुए निर्णयों का उल्लेख करते हुए कहा कि लोकसभा चुनाव को ध्यान मे रखते हुए हमें प्रदेश में अपनी संगठनात्मक संरचना को और अधिक मजबूत करते हुए सशक्त मंडल, सक्रिय बूथ समिति और पन्ना प्रमुख व पन्ना समिति की संरचना को सशक्त बनाना है। प्रदेश महामंत्री (संगठन) ने नगरीय निकाय चुनावों की दृष्टि से वार्ड समिति व बूथ समिति का गठन अति शीघ्र पूरा करते हुए सम्पर्क व संवाद के माध्यम से संगठन व सरकार की बात घर–घर तक पहुंचाने पर जोर दिया। उन्होंने मोर्चा, प्रकोष्ठों के कार्यकर्ताओं की नगर निकाय चुनावों में सक्रिय भागीदारी पर जोर देते हुए कहा कि प्रत्येक कार्यकर्ता को काम और प्रत्येक कार्य के लिए कार्यकर्ता इसका ध्यान रखकर हमें नगर निकाय के चुनावों को लेकर की जा रही तैयारियों में रखना है। उन्होंने कहा कि नगर निकाय के चुनाव में पार्टी कार्यकर्ता समाज के सभी वर्गों का समर्थन हासिल कर विजय संकल्प के साथ अपने–अपने क्षेत्रों में भाजपा की जीत सुनिश्चित करने के लिए कार्य करें।

बैठक को पार्टी के प्रदेश सहप्रभारी सत्या कुमार ने भी सम्बोधित किया। संचालन प्रदेश महामंत्री श्री गोविन्द नारायण शुक्ला ने किया। जिसमें प्रदेश पदाधिकारी क्षेत्रीय अध्यक्ष, जिला प्रभारी, जिलाध्यक्ष, क्षेत्र व जिला निकाय संयोजक और मोर्चो के प्रदेश अध्यक्ष सम्मिलित हुए।

‘पीएम किसान योजना’ ने 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक की आर्थिक सहायता प्रदान की

‘पीएम किसान’ के तहत किसी भी किश्त अवधि के लिए लाभ जारी करने की संख्या अब 10 करोड़ किसानों को पार कर गई है। शुरुआत में यह संख्या 3.16 करोड़ थी, अर्थात 3 वर्षों में 3 गुना से अधिक की वृद्धि हो चुकी है

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा 21 नवंबर को जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार ‘पीएम किसान योजना’ ने 3 से अधिक वर्षों के दौरान करोड़ों जरूरतमंद किसानों को सफलतापूर्वक 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक की आर्थिक सहायता प्रदान की। इस राशि में से 1.6 करोड़ रुपये से अधिक की राशि कोविड महामारी के कारण हुए लॉकडाउन के बाद से अंतरित की जा चुकी है।

‘पीएम किसान’ के तहत किसी भी किश्त अवधि के लिए लाभ जारी करने की संख्या अब 10 करोड़ किसानों को पार कर गई है। शुरुआत में यह संख्या 3.16 करोड़ थी, अर्थात 3 वर्षों में 3 गुना से अधिक की वृद्धि हो चुकी है।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 24 फरवरी, 2019 को शुरू की गई यह महत्वाकांक्षी योजना दुनिया की सबसे बड़ी प्रत्यक्ष लाभ अंतरण योजनाओं में से एक है। यह योजना करोड़ों किसानों तक लाभ पहुंचाने में सफल रही है और ख़ास बात यह है कि इसमें कोई बिचौलिया शामिल नहीं है।

‘पीएम किसान योजना’ भूमिधारक किसानों की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए केंद्र सरकार की एक मुख्य योजना है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से किसान परिवारों के बैंक खातों में प्रति वर्ष 6000 रुपये का वित्तीय लाभ हस्तांतरित किया जाता है। उच्च आर्थिक स्थिति की कुछ श्रेणियों को इस योजना से बाहर रखा गया है।

साथ ही, पीएम किसान योजना ने किसानों को कृषि गतिविधियों में उत्पादक निवेश की दिशा में मदद की है और कृषि क्षेत्र के समग्र सुधार में योगदान दिया है।

आईसीएआर और अंतरराष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान के सहयोग से किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि इस योजना ने कृषि के लिए आवश्यक वस्तुओं को खरीदने के लिए किसानों की तरलता की कमी को दूर करने में काफी मदद की है। इसके अलावा, छोटे व सीमांत किसानों के लिए इस योजना से उन्हें न केवल कृषि कार्यों के लिए धन की आवश्यकता को पूरा करने में मदद मिली है, बल्कि उनके दैनिक उपभोग, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा अन्य आकस्मिक खर्चों के लिए भी सहायता मिली है।

सितम्बर, 2022 में ईपीएफओ ने जोड़े 16.82 लाख सदस्य

पहली बार नौकरी चाहने वाले अपनी शिक्षा के बाद बड़ी संख्या में संगठित क्षेत्र के कार्यबल में शामिल हो रहे हैं और संगठित क्षेत्र में नई नौकरियां बड़े पैमाने पर देश के युवाओं को दी जा रही हैं

ईपीएफओ के 20 नवम्बर को जारी अस्थायी कुल वेतन भुगतान आंकड़ों से पता चलता है कि ईपीएफओ ने सितम्बर, 2022 के महीने में 16.82 लाख सदस्य जोड़े हैं। कुल वेतन भुगतान की साल–दर–साल तुलना सितम्बर, 2022 में पिछले वर्ष 2021 में इसी महीने की तुलना में 9.14 प्रतिशत सदस्यता वृद्धि दर्शाती है।

महीने के दौरान वास्तविक नामांकन पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान दर्ज मासिक औसत से 21.85 प्रतिशत अधिक है। माह के दौरान जोड़े गए कुल 16.82 लाख सदस्यों में से लगभग 9.34 लाख नए सदस्य पहली बार ईपीएफओ के दायरे में आए।

नये सदस्यों में 2.94 लाख सदस्यों के साथ 18–21 वर्ष के आयु वर्ग के लोगों की संख्या सबसे अधिक थी। इसके बाद 2.54 लाख सदस्य 21–25 वर्ष की आयु वर्ग के थे। लगभग 58.75 प्रतिशत 18–25 वर्ष के आयु वर्ग के हैं। इससे पता चलता है कि पहली बार नौकरी चाहने वाले अपनी शिक्षा के बाद बड़ी संख्या में संगठित क्षेत्र के कार्यबल में शामिल हो रहे हैं और संगठित क्षेत्र में नई नौकरियां बड़े पैमाने पर देश के युवाओं को दी जा रही हैं।

कुल वेतन भुगतान आंकड़ों के लिंग–वार विश्लेषण से संकेत मिलता है कि सितम्बर, 2022 में वास्तव में महिला सदस्यों का नामांकन 3.50 लाख रहा है। नामांकन आंकड़ों की साल–दर–साल तुलना से पता चलता है कि सितम्बर, 2022 में संगठित कार्यबल में महिलाओं की सदस्यता में पिछले वर्ष सितम्बर, 2021 की तुलना में 6.98 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। महीने के दौरान ईपीएफओ में शामिल होने वाले कुल नए सदस्यों में महिला कार्यबल का नामांकन 26.36 प्रतिशत दर्ज किया गया है।

सहकारिता में जनभागीदारी : आत्म निर्भर भारत

भारतीय जनता पार्टी प्रदेश मुख्यालय में सोमवार को सहकारिता प्रकोष्ठ की बैठक में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी एवं प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने सहकारिता की जन आन्दोलन बनाने के लिए आगामी कार्ययोजना पर चर्चा की। प्रदेश सरकार के सहकारिता मंत्री श्री जेपीएस राठौर ने भी बैठक को सम्बोधित किया। आगामी दिनों में क्षेत्र, जिला व समिति स्तर पर बैठकों के द्वारा सहकारिता प्रकोष्ठ संगठनात्मक कार्यक्रमों के क्रियान्वयन को विस्तार देगा।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने बैठक में कहा कि गुजरात माडल के अनुरूप ही उत्तर प्रदेश में सहकारिता में जन–जन की सहभागिता से जन आन्दोलन खड़ा करना है। उन्होंने कहा कि सहकारिता का क्षेत्र व्यापक है और सहकारिता में जनभागीदारी के द्वारा जन–जन की आत्मनिर्भरता से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के संकल्प आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार रूप दिया जा सकता है। उन्होंने कहा कि मोदी जी गांव व किसान की समृद्धि से समृद्धशाली भारत निर्माण के संकल्प को पूर्ण करने के लिए सतत कार्य कर रहे हैं और सहकारिता इस संकल्प की सिद्धि में सहायक सिद्ध हो सकता है। हमें इसी उद्देश्य से सहकारिता को जनसरोकार व जनसहभागिता से जोड़ना है।

प्रदेश महामंत्री संगठन श्री धर्मपाल सिंह ने बैठक में कहा कि पं. दीनदयाल उपाध्याय के अन्त्योदय दर्शन को साकार रूप देने में सहकारिता का क्षेत्र सहायक हो सकता है और गांव, गरीब, किसान, मजदूर को सहकारिता के माध्यम से रोजगार से जोड़ते हुए आर्थिक समृद्धि का कारक बन सकता है। उन्होंने कहा कि सहकारिता से जुड़े पार्टी के प्रत्येक पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता का दायित्व है कि वह समितियों के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने के लिए प्रेरित करें व उनकी आर्थिक व सामाजिक उन्नति में सहायक बनें। आगामी दिनों में सहकारिता प्रकोष्ठ क्षेत्र, जिला व समितियों की बैठकें करके सहकारिता को जन आन्दोलन बनाने के लिए कार्ययोजना पर कार्य प्रारम्भ करें।

बैठक में सहकारिता प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक डीके शर्मा, सह संयोजक आलोक कुमार सिंह, पुरूषोत्तम पाण्डेय, राम चन्द्र मिश्रा, यूपीसीएलडीएफ चेयरमैन वीरेन्द्र तिवारी, यूपी कोआपरेटिव बैंक चेयरमैन चौधरी तेजवीर सिंह, यूपीआरएनएसएस चेयरमैन सूर्य प्रकाश पाल, पीसीएफ चेयरमैन बाल्मिकी त्रिपाठी, पीसीयू चेयरमैन सुरेश गंगवार, जूट संघ चेयरमैन चन्द्रकुमार मिश्रा सहित प्रकोष्ठ क्षेत्रीय संयोजक व सहसंयोजक उपस्थित रहे।

वैचारिकी

सामूहिकता का भाव

हम देश के वैभव की कामना लेकर चल रहे हैं। रोज अपनी प्रार्थना में भी हम भगवान् से ही आशीर्वाद मांगते हैं कि हमारा राष्ट्र वैभव के परम शिखर पर पहुंचे। वैभव की यह कामना अत्यंत ही स्वाभाविक है, जिसमें यह कामना नहीं, जिसमें यह इच्छा नहीं, उसे मानव कहना अनुपयुक्त होगा। प्रत्येक व्यक्ति ऊंचा उठना चाहता है, आगे बढ़ना चाहता है, सुखी बनना चाहता है। किंतु विचार का प्रश्न यही है कि यह सुख, यह वैभव, यह उत्कर्ष, इसका रूप क्या हो? हम ऊपर बढ़ रहे हैं, इसका मतलब क्या, तो बहुत बार तो लोग इतना ही मतलब समझते हैं कि व्यक्तिगत दृष्टि से हमारा मान–सम्मान बढ़ जाए, हम ऊंचे हो जाएं। हमें सुख के सभी साधन उपलब्ध हो जाएं और लोग उसके लिए प्रयत्न भी करते हैं, पढ़ाई–लिखाई बाकी के जीवन की दौड़–धूप–धंधा – यह सब इसी हिसाब से किया जाता है कि मैं व्यक्ति इस नाते से बड़े से बड़ा बन जाऊं। व्यक्तिगत आकांक्षा को लेकर लोग काम करते हैं। परंतु जरा गहराई के साथ सोचें तो एक बात पता लगेगी कि यह व्यक्तिगत आकांक्षा जिस समाज में हम पैदा हुए हैं, जिस राष्ट्र के हम अंग हैं, उससे अलग हटकर के पूरी नहीं की जा सकती। अगर कुछ पूरा हो सकता है, अधूरा हो सकता है। अपनी किसी भावना को, आकांक्षा को, आत्मा को दबा के तो किया जा सकता है, किंतु सर्वोत्मुखी विकास, सभी पहलुओं से प्रगति यह अकेले–अकेले नहीं की जा सकती, क्योंकि व्यक्तिगत जीवन नाम की यह चीज़ वास्तव में कोई चीज है नहीं, यह तो शायद शरीर का बंधन है, जिसके कारण ऐसा पता लगता है कि मैं हूं, परंतु जब 'मैं' का हम लोग विचार करते हैं तो हममें से हरेक सोचेगा कि यह 'मैं' क्या है और उस 'मैं' का जब आप विश्लेषण करेंगे, उसका एनालिसिस करेंगे तो उस 'मैं' के अंदर हमें क्या दिखाई देगा? नाम मेरा लीजिए, दीनदयाल। इस दीनदयाल के नाम के साथ मेरा मैं जुड़ा हुआ है, इसके साथ बड़ा मोह भी है। हरेक का अपने नाम के साथ मोह होता है, इसी के द्वारा लोग मुझे पहचानते हैं। मुझे पुकारते हैं और उसका मेरा इतना संबंध हो गया है कि नींद में भी अगर कोई मेरा नाम लेकर पुकारे तो मैं एकदम जाग जाता हूं।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

आप जानते हैं कि जब कोई आदमी सोता है तो बाक़ी की आवाज आप करते रहिए एकाएक आंख नहीं खुलती, इधर–उधर के नामों से पुकारते रहिए तो आंख नहीं खुलती। परंतु उसी व्यक्ति का नाम लेकर जब पुकारेंगे तो फिर उसकी नींद खुल जाती है। क्यों खुल जाती है? शोर से अगर नींद खुल जाती। कभी शोर से खुलती है और बहुत बार नहीं खुलती। बाक़ी इधर–उधर के पचास नाम पुकारें, नहीं खुलती और अपने ही नाम को पुकारा तो एकदम कैसे ध्यान आ जाता है। भीड़ में भी अगर कोई एकदम दूर से पुकारे 'दीनदयाल' तो एकदम लगता है कि कोई बुला रहा है। कौन बुला रहा है–आदमी चौंक जाता है, क्योंकि उसके नाम के साथ मैं जुड़ा है, परंतु जब गंभीरता के साथ पूछा जाए कि भई, दीनदयाल नाम आया कहां से, तो पता लगेगा कि इसकी जगह नाम जॉन क्यों नहीं हुआ, इसकी जगह कोई और नाम मोहम्मद बेग क्यों नहीं रखा गया। जिसके साथ मेरा इतना नाता हो गया, सबकुछ जुड़ गया। लोग कहेंगे कि माता–पिता ने रख दिया। माता–पिता ने भी यही नाम क्यों रखा, क्योंकि नाम मां ने रखा, उससे भी कोई बहुत बड़ा अर्थ तो नहीं। कोई भी नाम रखा जा सकता था, परंतु नहीं रखा, यही रखा। इसका मतलब है कि जिस समाज का मैं अंग हूं, उस समाज में यह नाम प्रचलित है। यह नाम समाज से प्राप्त हुआ है। यह नाम मेरा अपना नहीं है और इसलिए जिस समाज में जो जन्मता है, उसके हिसाब से उसे नाम प्राप्त हो जाता है।

वास्तविकता तो यह है कि समाज से हमारा संबंध नाम के साथ ही हो जाता है। यानी माता–पिता के साथ संबंध जन्म से, परंतु नाम का संबंध तो एकदम समाज के साथ जुड़ गया कि हां, आप इस समाज के हैं और फिर इतना ही नहीं उसके आगे और जुड़ता है, फिर आप बोलते हैं, अब जो भाषा मैं प्रयोग कर रहा हूं, यह भाषा तो मेरी नहीं, मुझे किसी ने दी है। अब लोग बोलते हैं कि मातृभाषा। अब ठीक है कि सबसे

पहले मां ही भाषा सिखाती है। वैसे तो एक जगह किसी ने कहा कि भाई, लोग मातृभाषा ही क्यों कहते हैं। पितृभाषा क्यों नहीं कहते। आखिर मां–बाप दोनों घर में रहते हैं। तो किसी ने कहा कि भाई, यह कहते हैं कि बेचारे पिता को तो घर में बोलने का मौका ही नहीं मिलता, मां ही बोलती रहती है। इसके कारण उसकी मातृभाषा कहते हैं। किंतु बच्चों को बोलना सिखाना सबसे पहले मां ही सिखाती है। परंतु मां अकेली तो नहीं है और भी हैं, आस–पास के लोग हैं। घरवाले हैं, बाकी के लोग हैं, बहुत से शब्द समाज सिखाता है। तो यह भाषा समाज से आई। विचार करने की पद्धति समाज से आई, अच्छा–बुरा क्या है, यह सब समाज से आया, मेरे मन में किस चीज से समाधान होगा, संतोष होगा, यह भी समाज से आता है। आख़िर यह जो चीज़ है, समाज के चार लोग सुख–दुःख बांटते हैं, यह अकेला नहीं है। कोई कहे कि भाई अकेला होता है, तो, यह ग़लत है, अगर अकेले ही में सुख–दुःख हो जाए तो फिर यह जो शादी–विवाह में इतने लोग इकट्ठे किए जाते हैं, जरूरत ही नहीं। परंतु हम जानते हैं कि अपने घर का पैसा खर्च करके लोगों को इकट्ठा करते हैं, बुलाते हैं, खिलाते हैं और कोई नहीं आया, तो उलाहने देते हैं। अब किसी के यहां शादी हो, वह आपको निमंत्रण दे और आप न जाएं और जब वह मिले कहे कि देखो भाई, तुम आए नहीं उस समय तुम जवाब दोगे कि भाई, मैं इसलिए नहीं आया कि मैंने सोचा कि चला जाऊंगा तो तुम्हारा और कुछ न सही तो चार आने का खाकर जाऊंगा, इसलिए तुम्हारी बचत कर दी। ऐसा अगर आप उसको कहें तो उसको बुरा लगेगा। यानी वह बचत नहीं चाहता, बल्कि खर्च करना चाहता है। क्यों? इसलिए कि बिना चार लोग इकट्ठा किए उसका सुख वास्तव में सुख नहीं। सुख–दुःख का संबंध समाज के साथ आता है, समाज का एप्रिसिएशन समाज की सराहना, यह आदमी को सबसे बड़ी लगती है। लोगों का मान–सम्मान भी जो है, उसके लोग बड़े भूखे रहते हैं। अब आजकल क्या हैकृ पद्मश्री, पद्मभूषण इसके भूखे, काहे के भूखे हैं? क्या है पद्मश्री? पद्मभूषण? इनमें न तो कहीं पद्म है, न श्री है। परंतु फिर भी लोगों को लगता है कि उसके पीछे समाज ने एक सम्मान दिया है, यह भावना छिपी है और इसलिए व्यक्ति समाज के सम्मान का ही भूखा रहता है।

समाज ने किसी को बुरा कहा तो बुरा लगता है। समाज ने किसी को अच्छा कहा, तो मन के अंदर अच्छा लगता है। अपना सुख–दुःख इस बात के ऊपर निर्भर करता है। नहीं तो जिसको कहते हैं कि जंगल में मोर नाचा किसने देखा। आदमी चाहता है कि मोर नाचे और लोग देखें और इस दिवानेपन की होड़ में ही सब बातें अच्छी बुरी, अनेक प्रकार की, आदमी कर जाता है। तो यह सब चीज यानी नाम की चीज़ नहीं, और फिर बाक़ी के किसी को आप जानते हैं कि बुरा–भला भी किसी को गाली दे दे। मुझे मालूम है, एक जगह ऐसा ही हुआ, गाड़ी का मुझे अनुभव है। गाड़ी में बातचीत हो रही थी और होते–होते दो लोगों के अंदर कुछ तू–तू मैं–मैं हो गई। अब तू–तू, मैं–मैं होती रही और कोई बात नहीं, और उसने फिर उसको दो–चार बुरी–भली भी बातें कहीं, इसने भी उसको जवाब दिया। इतना होते–होते और उसमें से एक ने न मालूम उसको क्या हुआ और जो दूसरे सज्जन थे, वह पंजाबी थे, तो इसलिए यह एकदम बिगड़ा और बोला कि यह सब पंजाबी ऐसे ही होते हैं, इनका न तो दिमाग होता है, न बाक़ी कुछ होता है और हर जगह लड़ने के लिए आमादा हुए रहते हैं। पंजाबी कहकर उसको तो मैंने देखा कि फिर जब तक तो उसको व्यक्तिगत रूप से भला–बुरा कहा, तब तक थोड़ा–बहुत तू–तू, मैं–मैं चल रही थी, पर जैसे ही पंजाबी कहा तो उसको एकदम जोश आ गया और बोला, अच्छा और फिर कहा कि देखो भाई सबकुछ तो ठीक है, अब तक तुमने मुझे गाली दी थी तो सह लिया किंतु तुम तो हमारे सब पंजाबियों को गाली दे रहे हो, यह सहन नहीं होगा। भाई, यह जो बात आ गई है, इसका मतलब यह है कि उसके अंदर कहीं वह चीज है। अगर वह नहीं होती, तो उसको क्या था और इतना नहीं तो और आगे जाकर देखें। अब अगर कोई आज रामचंद्रजी को बुरा–भला कहने लगे, छत्रपति शिवाजी महाराज को बुरा–भला कह दे, भगवान् कृष्ण को कह दे, तब आपका खून भड़केगा कि नहीं? अगर भड़केगा तो क्यों भड़केगा? अगर आपका जितना 'मैं' है, उस 'मैं' का संबंध वह जो शरीर है, उतने तक ही रहता तो क्या? कहीं आपके अंदर रामचंद्रजी बैठे हैं क्या? परंतु लगता है, कहीं–न–कहीं बैठे हैं और इसलिए बुरा लगता है, नहीं तो बुरा लगने का कारण नहीं।

वास्तविकता यह है कि हम हैं; यही महत्त्व की चीज है। हम हैं इसलिए हमारा सबका सुख है, सामूहिक सुख है और दुःख यह भी सामूहिक। वैभव सामूहिक है और इसलिए हम लोगों ने भगवान् से यही प्रार्थना की है कि हे भगवान् हमारे राष्ट्र को और वैभवशाली बनाओ।

अगर बिल्कुल ही भौतिक दृष्टि से देखें तो यही लगना नहीं चाहिए, परंतु ऐसा लगता है कि कहीं मेरे अंदर रामचंद्रजी हैं। मेरे अंदर श्रीकृष्ण हैं। मेरे अंदर मेरे पूर्वज यानी जो शायद मेरे माता–पिता मर गए, वह भी मेरे अंदर बैठे हैं। कहीं–न–कहीं मेरे अंदर जिसको मेरा मन, मेरा मस्तिष्क, मेरी बुद्धि, मेरी भावना, इनके वह अंग बनकर के बैठे हैं और फिर उसके साथ मेरा देश बैठा है, यानी अगर इसका विश्लेषण करें तो फिर यही पता लगेगा कि फिर 'मैं' नाम की चीज़, यह तो केवल एक शाब्दिक प्रयोग हो गया है। वास्तविकता यह है कि हम हैं, यही महत्त्व की चीज है। हम हैं इसलिए हमारा सबका सुख है, सामूहिक सुख है और दुःख यह भी सामूहिक। वैभव सामूहिक है और इसलिए हम लोगों ने भगवान् से यही प्रार्थना की है कि हे भगवान् हमारे राष्ट्र को और वैभवशाली बनाओ।

सरदार बल्लभभाई पटेल पुण्यतिथि (15 दिसंबर) पर विशेष

सरदार पटेल अपने कामों से ही अजर-अमर और अटल हैं: अमित शाह

सरदार वल्लभभाई पटेल कल्पना को जमीन पर उतारने के लिए कठोर परिश्रम और पुरूषार्थ करने वाले कर्मयोगी थे। सरदार पटेल ने अपना पूरा जीवन भारत की आज़ादी, अखंड भारत के निर्माण और नए भारत की नींव डालने में लगा दिया। काफी लंबे समय तक सरदार पटेल को भुलाने का प्रयास किया गया। सरदार वल्लभभाई पटेल को भारत रत्न मिलने, उनका स्मारक बनाने और उनके विचारों को संकलित करके युवा बच्चों की प्रेरणा बनाने में कई साल लग गए। सरदार पटेल अपने कामों से ही अजर–अमर और अटल हैं।

हम आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं और सरदार पटेल के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने 19वीं सदी में थे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आज सुबह दुनिया के सबसे ऊंचे, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी पर सरदार पटेल को श्रद्धांजलि अर्पित की। मोदी जी के नेतृत्व में देश के 3 लाख से ज्यादा गांव के करोड़ों किसानों के खेती के औजारों के लोहे को पिघलाकर ैजंजनम विन्दपजल बनाया गया है। मोदी जी ने देश के लोगों की आशा, अपेक्षा और स्वप्नों को सरदार साहब की प्रतिमा में संजोने का काम किया है।

ज़मीनी समस्याओं के निवारण में सरदार पटेल जैसी मूल विचारधारा किसी के पास नहीं थी। देश में सहकारिता आंदोलन को जमीन पर उतारने का काम भी सरदार पटेल ने ही किया था। बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि सरदार पटेल ने ही अमूल का बीज बोया और त्रिभुवनदास पटेल जी ने सरदार साहब के विचार, मार्गदर्शन व प्रेरणा से ही अमूल की स्थापना की। 1920 से 1930 के बीच देश में किसानों के शोषण के खिलाफ आवाज़ उठ रही थी और जिस बखूबी से सरदार पटेल ने किसानों को एकत्रित किया, उसे देखकर गांधी जी ने उन्हें सरदार का नाम दिया। लक्षद्वीप, अंडमान निकोबार, जोधपुर, जूनागढ़ और हैदराबाद आज अगर भारत का हिस्सा हैं, तो वो सरदार पटेल के ही कारण हैं। सरदार पटेल के कारण ही भारत माता का मुकुट मणि कश्मीर भी आज भारत के पास है। सरदार पटेल ने ही निर्णय कर वहां सेना भेजने का काम किया था, जिसने पाकिस्तान के सैनिकों को परास्त कर कश्मीर को भारत के साथ जोड़ा।

सरदार पटेल न होते तो भारत का मानचित्र जैसा आज है वैसा न होता। आज़ादी के बाद सरदार पटेल ने पूरे भारत की 500 से ज्यादा रियासतों और राजाओं–रजवाड़ों को एकत्रित करने का काम किया। खराब स्वास्थ्य के बावजूद देशभर की यात्रा कर 500 से ज्यादा रियासतों को भारतीय संघ में जोड़ने का काम सरदार पटेल ने किया। आजादी के बाद भारत में लोकतंत्र की नींव डाली गयी और सरदार वल्लभभाई पटेल के अथक प्रयासों से भारत को एक किया गया। आजादी के समय ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने कहा था कि अंग्रेजों के जाते ही भारत खंड–खंड हो जाएगा। भारतीय नेता कम क्षमता वाले है वो सत्ता के लिए लड़ेंगे, लेकिन सरदार साहब ने पूरे देश को एक किया और आज भारत उसी ब्रिटेन को पीछे छोड़ विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया।

भारत में लोकतंत्र की नींव 75 सालों में बहुत गहरी हुई है और इसी का परिणाम है कि आजादी के बाद लोगों द्वारा शांति से वोट द्वारा लिए गए फैसले को सभी ने माना और बिना किसी रक्तपात के देश में कई बार सत्ता परिवर्तन हुए। लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने अथक परिश्रम कर रियासतों का एकीकरण तो किया ही, साथ ही साथ अखिल भारतीय सेवाओं और आसूचना ब्यूरो की नींव डाली, केंद्रीय पुलिस की कल्पना

की और प्रशासनिक सेवाओं के सारे नियम भारतीय स्वरूप में ढालने का कार्य भी किया। सरदार वल्लभभाई पटेल के ही प्रयासों का परिणाम है कि भारत में केंद्र–राज्य के ढांचे में इस प्रकार विभाजन किया गया है कि किसी भी प्रकार का कोई मतभेद न हो और इसी का नतीजा है कि केंद्र–राज्यों के मध्य आज कोई अंतर्विरोध नहीं है।

सरदार पटेल के अहिंसा के विचार भी बहुत वास्तविक थे और उन्होंने हर समस्या का समाधान खोजकर यश पाने की इच्छा ना रखते हुए परिणाम लाने का काम किया। देश को एक ओर जहां महात्मा गांधी जी का आदर्शवादी और आध्यात्मिक नेतृत्व मिला, तो वहीं दूसरी तरफ सरदार पटेल जैसे व्यवहारिक, दूरदर्शी और वास्तविक नेता का साथ मिला। इन दोनों के कॉम्बिनेशन ने भारत को बहुत कुछ दिया है। भारत के संविधान निर्माण की प्रक्रिया के दौरान सरदार पटेल ने कई अहम फैसले लिए। उन्होंने बाबासाहेब डॉ. बी. आर. अंबेडकर को संविधान का प्रारुप बनाने और संकलन करने का काम देने की पैरवी की और संविधान को संतुलित बनाने के लिए कई बार अपने विचार संविधान सभा के सामने रखे। इन सबके बारे में जानने और संविधान की आत्मा को समझने के लिए सरदार पटेल, के. एम. मुन्शी और बाबासाहेब डॉ. बी. आर. अंबेडकर की संविधान चर्चाओं को पढ़ना चाहिए।

सरदार वल्लभभाई पटेल कल्पना को जमीन पर उतारने के लिए कठोर परिश्रम और पुरूषार्थ करने वाले कर्मयोगी थे। सरदार पटेल ने अपना पूरा जीवन भारत की आज़ादी, अखंड भारत के निर्माण और नए भारत की नींव डालने में लगा दिया।

आजादी के बाद के 75 साल बहुत कठिन रहे। कभी युद्ध तो कभी आतंकवाद का सामना करना पड़ा, कई वैश्विक और आर्थिक समस्याओं से भी गुजरना पड़ा, लेकिन इन सब कठिनाइयों के बावजूद भारत ने विगत 75 वर्षों में सर्वस्पर्शी और सर्वसमावेशी विकास करते हुए लोकतंत्र की नींव को गहरा किया। देश को संविधान की स्प्रिट के अनुसार चलाया और देश की सुरक्षा को सुनिश्चित किया जिसके चलते दुनिया में कोई भी भारत की सीमा और सेना का अपमान करने का दुस्साहस नहीं कर सकता। भारत ने विकास को गति देते हुए दुनियाभर में अपने अर्थतंत्र को मज़बूती के साथ आगे बढ़ाया है और कुछ ही सालों में इंफ्रास्ट्रक्चर के मामले में भी भारत दुनिया के प्रमुख देशों के नजदीक पहुंच जाएगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आजादी के अमृत महोत्सव को मनाने का निर्णय तीन उद्देश्य से किया। एक, देश की आने वाली युवा पीढ़ी आजादी के आंदोलन और संघर्ष को समझे, दूसरा, 75 साल में हमने जो प्राप्त किया है हम उसको जानें और तीसरा, हम सब आजादी की शताब्दी वर्ष का लक्ष्य तय करें। कोई भी एक छोटा सा संकल्प लें और उसे पूरा करने के लिए कटिबद्ध रहना चाहिए।

सरदार पटेल विद्यालय में पूरी प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में होती है, हिंदी के साथ–साथ तमिल, उर्दू और बांग्ला को भी सीखने का अवसर मिलता है। हम भारत की किसी भी भाषा व बोली को लुप्त नहीं होने देंगे। हम कोई भी भाषा सीखें मगर अपनी मातृभाषा कभी मत छोड़ें, क्योंकि व्यक्ति की क्षमता बढ़ाने, निर्णय पर पहुंचने व विश्लेषण की प्रक्रिया करने का सबसे अच्छा माध्यम उसकी मातृभाषा होती है। देश में अंग्रेजी की जानकारी को बौद्धिक क्षमता के साथ जोड़ा जाता है परन्तु भाषा मात्र अभिव्यक्ति का माध्यम है, भाषा आपकी क्षमता की परिचायक नहीं है और अगर आपके अंदर क्षमता है तो दुनिया को आपको सुनना ही पड़ेगा। अभिभावकों से बच्चों के साथ अपनी मातृभाषा में बात करना चाहिए। युवाओं की यह जिम्मेदारी है कि वे भाषा के कारण बने इंफेरियारिटी कॉम्प्लेक्स के माहौल को तोड़ें। देश के विकास में योगदान का श्रेय यदि हम केवल अच्छी अंग्रेजी बोलने वाले कुछ ही लोगों को देते हैं तो अपनी भाषा में सोचने, बोलने, लिखने, रिसर्च एंड डेवलपमेंट करने वाले अधिकांश बच्चों को विकास की प्रक्रिया से काटकर सोसाइटी के अंदर दो हिस्से कर देते हैं। भाषा से हम अपनी संस्कृति और साहित्य को जानते हैं और सोचने की प्रक्रिया को ज्यादा प्रबल व प्रखर बनाते हैं। मोदी सरकार की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का भी महत्वपूर्ण आयाम है कि बच्चों की प्राथमिक शिक्षा अपनी भाषा में होनी चाहिए, टेक्निकल एजुकेशन, अनुसंधान और मेडिकल एजुकेशन भी स्थानीय भाषा में उपलब्ध होनी चाहिए।

हमें महात्मा गांधी और सरदार पटेल की कल्पना का आत्मविश्वास से भरपूर ऐसा भारत बनाना है जो दुनिया की स्पर्धा में सबसे आगे निकले और ऐसा भारत तभी बन सकता है जब हम भाषा की हीन भावना को छोड़ें। कुछ लोगों द्वारा भुलाने के किए गए लाख प्रयासों के बावजूद सरदार पटेल आज भी देश के हर व्यक्ति के मन में बसे हुए हैं, क्योंकि वे भारत की मिट्टी की सुगंध से उपजे एक व्यावहारिक नेता और भारतीय संस्कृति के प्रतीक थे, जिन्होंने कभी कुछ प्राप्त करने की इच्छा नहीं रखी। लौह पुरुष सरदार पटेल ने आजादी के समय कांग्रेस की वर्किंग कमेटी में सबसे ज्यादा वोट मिलने के बाद भी देश के प्रधानमंत्री पद का त्याग कर दिया, ताकि देश के अंदर बन रही नई सरकार में विवाद न उपजे और हमारे दुश्मन मजबूती न हों। सरदार वल्लभभाई पटेल के बारे में पढ़ने और उनके बताए मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए, ताकि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आजादी की शताब्दी में भारत को दुनिया में नंबर एक बनाने के लिए चलाए गए अभियान को ताकत मिले।

31 अक्टूबर, 2022 को
सरदार पटेल विद्यालय, न दिल्ली में दिए गए भाषण

भारतीय जनता पार्टी
पदाधिकारी बैठक

भारतीय जनता पार्टी, उत्तर प्रदेश
प्रदेश पदाधिकारी
दिनांक : 11 दिसम्बर, 2022
स्थान : प्रदेश कार्यालय

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91 डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2021-23
नवम्बन द्वितीय अंक 2022 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–29 (द्वितीय पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक : अरूण कान्त त्रिपाठी